

5450 स्कूलों ने लिया हिस्सा, लक्ष्य 65.3 प्रतिशत ही पूरा

इंस्पायर मानक में प्रदेश के 36150 आइडिया का लक्ष्य, अब तक 23614 ही नामांकन

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने और उनके नए वैज्ञानिक विचारों को मंच देने के लिए

■ 22 जिलों में एक भी जिला 100 प्रतिशत तक नहीं पहुंचा, 10 अक्टूबर तक बढ़ी डेडलाइन

योजना में भाग लेते हुए 23614 नामांकन किए हैं। विभाग ने प्रदेश के लिए कुल 36150 नामांकन का लक्ष्य निर्धारित किया है। ऐसे में 16 सितंबर तक राज्य स्तर पर लक्ष्य का 65.3 प्रतिशत ही हासिल हो पाया था। खास तौर पर उन स्कूलों को योजना से जोड़ने पर जोर दिया गया है जिन्होंने अभी तक कोई नामांकन नहीं किया है। विभाग ने जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे ऐसे स्कूलों को अधिकतम नामांकन कराने के लिए निर्देशित करें और निर्धारित समय के भीतर अनुपालन सुनिश्चित करें।

16 सितंबर तक जिलेवार स्थिति							
जिला	नामांकन	लक्ष्य-लक्ष्य प्राप्ति (प्रतिशत में)	गुरुग्राम	1192	1800	66.2	
सिरसा	1736	1900	91.4	कैथल	996	1600	62.2
च.दादरी	884	1000	88.4	पानीपत	961	1550	62
फतेहाबाद	1125	1350	83.3	पलवल	1205	1950	61.8
गुह	1416	1700	83.3	रेवाड़ी	894	1500	59.6
महेंद्रगढ़	1312	1600	82	झज्जर	934	1650	56.6
कुरुक्षेत्र	1420	1800	78.9	जिंद	899	1650	54.5
अंबाला	1252	1650	75.8	रोहतक	748	1500	49.9
करनाल	1421	2050	69.3	सोनीपत	1085	2250	48.2
फरीदाबाद	919	1350	68	भिवानी	652	1500	43.5
हिसार	1326	1950	68	यमुनानगर	629	1950	32.2
पंचकुला	608	900	67.5	कुल	23614	36150	65.3

सिरसा सबसे आगे, यमुनानगर में लक्ष्य की एक तिहाई से भी कम पूर्ति

16 सितंबर तक सिरसा 91.4 प्रतिशत लक्ष्य हासिल कर जिलेवार स्थिति में सबसे ऊपर था। इसके बाद चरखी दादरी 88.4, फतेहाबाद और गुह 83.3, महेंद्रगढ़ 82 तथा कुरुक्षेत्र 78.9 प्रतिशत पर रहे। अंबाला ने भी 75.8 प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया। दूसरी ओर यमुनानगर 32.2 प्रतिशत के साथ सबसे पीछे रहा। भिवानी में 43.5, सोनीपत में 48.2 और रोहतक में 49.9 प्रतिशत नामांकन हुए। विभाग के अनुसार चार जिले ऐसे हैं जो निर्धारित लक्ष्य का 50 प्रतिशत भी हासिल नहीं कर पाए हैं।

एक स्कूल से अधिकतम 5 बच्चों के आइडिया भेजने का प्रावधान

इंस्पायर मानक के माध्यम से विद्यार्थियों के वैज्ञानिक सोच और नए आइडिया को प्रोत्साहित किया जाता है। स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों से विज्ञान और नए विचार लिए जाते हैं। चयनित आइडिया को विभागीय पोर्टल पर नामांकन के रूप में भेजा जाता है। विभाग ने प्रत्येक स्कूल से अधिकतम पांच विद्यार्थियों के आइडिया पोर्टल पर भेजने की व्यवस्था रखी है। इसी आधार पर जिलेवार लक्ष्य तय किए गए हैं। विभाग द्वारा चयनित आइडिया को बच्चों को मोटिवेट करने के लिए स्कॉलरशिप के रूप में प्रशंसा पत्र दिए जाते हैं।

10 अक्टूबर तक मौका

एससीईआरटी हरियाणा की ओर से कहा गया है कि नामांकन की अंतिम तिथि अब 10 अक्टूबर कर दी गई है। जिलों को इस अतिरिक्त समय का पूरा उपयोग करने और जिन स्कूलों ने अभी तक योजना में भाग नहीं लिया है उन्हें अधिकतम नामांकन के लिए निर्देशित करने को कहा गया है।

खबर संक्षेप

जाहरवीर गोगा जी का मेला आज

मंडी अटेली। जाहर वीर गोगा जी का मेला भौड़ी की बणी में आज 20 सितंबर को भरेगा। मेले में भंडारा के साथ विभिन्न खेल स्पर्धाएं भी होंगी। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए मेले में महिलाओं की कबड्डी भी होगी। इसके अलावा मेले में अजीत यादव पुत्र ताराचंद सीआरपीएफ की ओर से लड़कों की कबड्डी प्रथम को एक लाख 51 हजार व द्वितीय को एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। मेला कमेटी सदस्य रेशन लाल ने बताया कि लड़कियों की कबड्डी में प्रथम विजेता को 31 हजार व द्वितीय को 21 हजार रुपये का इनाम दिया जाएगा। मेले में हरिओम यादव की ओर से 31 हजार रुपये की कामड़ा कुश्ती के अलावा अनेक कुश्तियां होंगी। मेले में दुष्यंत सिंह व भूरू सिंह की ओर से देशी घी का भंडारा भी होगा। मेला 19 सितंबर से शुरू होगा।

मनीष गोगिया बने सह संयोजक

नारनौल। मनीष गोगिया संस्थापक नेकी की दीवार नीड़ी हेल्प ग्रुप को टाईगर क्लब परिवार की ओर से आयोजित होने वाले दुर्गा पूजा महोत्सव का सह संयोजक बनाया गया है। क्लब संरक्षक राकेश यादव व प्रधान राकेश यादव ने माता रानी का पटक पहनाकर क्लब का सदस्य बनाया व कार्यक्रम सह संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी।

आज प्रजापति प्रतिभा सम्मान समारोह

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव दौंगड़ा जाट स्थित स्कूल खेल मैदान में आज 20 सितंबर को जिला स्तरीय प्रजापति प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ. धर्मवीर सिंह प्रजापति मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। समारोह को सफल बनाने के लिए प्रजापति महासभा की टीम ने विभिन्न गांवों में पहुंचकर समाज के लोगों को कार्यक्रम का निमंत्रण दिया। जानकारी देते हुए राष्ट्रीय प्रजापति महासभा के जिला प्रधान विजय सिंह प्रजापति ने बताया कि समारोह में समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों और युवाओं को सम्मानित किया जाएगा।

पिस्तौल के साथ युवक गिरफ्तार

कनीना। पुलिस ने आरोपित से एक अवैध देसी पिस्तौल बरामद कर उसके खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज किया है। सीआईए नारनौल के एसएसआई भरत सिंह अपनी टीम के साथ धनौदा बस अड्डा के पास मौजूद था। इसी दौरान उन्हें गुप्त सूचना मिली। जिसमें खेडी खेल स्टडीयम के पास एक युवक के हथियार सहित खड़ा होने की बात कही गई। पुलिस टीम ने बताए गए प्रकरण के अनुसार युवक से पूछताछ की, तो भागने का प्रयास किया। जिस पर पुलिस कर्मियों ने धर-दबोचा। पुलिस पड़ताछ में उसने अपना नाम संदीप उर्फ लंबू बताया। तलाशी लेने पर अवैध देसी पिस्तौल तथा मेगजीन खाली पाई गई।

एक अक्टूबर करीब, न परचेज की उम्मीद न एमएफएमबी पोर्टल खुलने के आसार

बाजरा मंडी में पहुंचा, सरकारी खरीद को लेकर तस्वीर अब तक साफ नहीं



किसान एमएसपी से 600 रुपये कम भाव पर फसल बेचने को मजबूर

जिले में 49,389 एकड़ घटा बाजरे का पंजीकृत रकबा पिछले साल सरकारी खरीद नहीं होने से किसानों का भरोसा भी डगमगाया

राजकुमार ►► नारनौल

नारनौल। खरीफ सीजन की प्रमुख फसल बाजरा खेतों से निकलकर मंडियों में पहुंचना शुरू हो गया है, लेकिन सरकारी खरीद को लेकर अभी तक तस्वीर साफ नहीं हुई है। एक अक्टूबर से खरीफ फसलों की परंपरागत सरकारी खरीद शुरू होने का समय नजदीक आ चुका है, मगर राज्य सरकार की ओर से बाजरे की न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद के संबंध में अब तक कोई आदेश जारी नहीं किया गया है। दूसरी ओर मेरी फसल-मेरा ब्यूरा (एमएफएमबी) पोर्टल पर पंजीकरण की प्रक्रिया भी किसानों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। ऐसे में जिले के किसानों के सामने इस बार भी बाजरा सरकारी एजेंसी को बेच पाएंगे या नहीं, इसे लेकर असमंजस बना हुआ है।

बता दें सरकारी खरीद की तैयारियों के लिए खरीद एजेंसी का निर्धारण, मंडियों की व्यवस्था, भंडारण क्षमता तय करना, बारदाने की उपलब्धता और खरीदे गए बाजरे के उठान के लिए टेंडर जैसी प्रक्रिया पहले से पूरी करनी होती है। मगर अभी तक इन तैयारियों को लेकर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है। इससे किसानों के साथ-साथ मंडी



नारनौल। मंडी में टीनशेड के नीचे रखा बाजरा।

फोटो: हरिभूमि

अगले आदेश पर टिकी निगाहें

सरकारी खरीद के आदेश और एमएफएमबी पोर्टल को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं होने से किसानों की निगाहें अब सरकार के अगले आदेश पर टिकी हैं। सूत्र बताते हैं कि मंगलवार को उच्चाधिकारियों की चंडीगढ़ स्तर पर मीटिंग होगी है, जिसमें कोई निर्णय आ सकता है। किसान चाहते हैं कि सरकारी खरीद की घोषणा समय रहते हो और खरीद की पूरी व्यवस्था मंडियों में फसल की आवक बढ़ने से पहले तैयार कर ली जाए, ताकि उन्हें एमएसपी से कम भाव पर बाजरा बेचने के लिए मजबूर न होना पड़े।

अधिकारियों और खरीद एजेंसियों में भी असमंजस की स्थिति बनी हुई है। किसान आशांकित हैं कि कहीं पिछले साल की तरह इस बार भी उन्हें अपनी उपज निजी व्यापारियों को ही बेचने के लिए मजबूर न होना पड़े। इस बीच नारनौल मंडी में बाजरे की आवक शुरू हो चुकी है। इस सीजन में पहली बार 14 सितंबर को बाजरा मंडी में पहुंचा था और अब तक करीब 510 क्विंटल बाजरे की आवक हो चुकी है। सरकारी खरीद शुरू नहीं होने के



यह कहती हैं मंडी सदिव

बाजरे की सरकारी खरीद के संबंध में अभी तक कोई आदेश प्राप्त नहीं हुए हैं। हालांकि मंडी प्रशासन अपनी ओर से तैयार है। मंडी में फसल लेकर आने वाले किसानों को मूलभूत सुविधाओं के लिए किसी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जाएगी।

-नकुल यादव, सचिव, मॉकैट कमेटी, नारनौल

कारण आदतियों ने किसानों से बाजरा करीब 2290 से 2300 रुपये

छह मंडियों में होती है बाजरे की खरीद, इस बार भी इंतजार

जिले में नारनौल सहित महेंद्रगढ़, अटेली, कनीना, नांगल चौधरी और सतनाली मंडियों को खरीफ एवं रबी सीजन की खरीद के लिए निर्धारित किया गया है। इन मंडियों में बाजरे की आवक होती है, लेकिन इस बार सरकारी खरीद को लेकर अभी तक कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं पहुंचे हैं। किसानों की सबसे बड़ी चिंता यह है कि जैसे-जैसे मंडियों में बाजरे की आवक बढ़ेगी, उन्हें फसल रोककर रखने के लिए मंडारण की व्यवस्था करनी पड़ेगी। छोटे किसान लंबे समय तक फसल रोकने की स्थिति में नहीं होते। ऐसे में सरकारी खरीद शुरू नहीं होने पर उन्हें बाजार भाव पर ही बाजरा बेचने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। मौजूदा बाजार भाव और घोषित एमएसपी के बीच करीब 600 रुपये प्रति क्विंटल का अंतर किसानों की चिंता को और बढ़ा रहा है।

पिछले साल भी सरकारी खरीद से वंचित रहे किसान

जिले में बाजरे की खेती बड़े स्तर पर होती है। वर्ष 2025 में मेरी फसल-मेरा ब्यूरा पोर्टल पर 92,465 किसानों ने 3,04,097 एकड़ क्षेत्र में बाजरे का पंजीकरण कराया था। इस खरीफ सीजन में यह आंकड़ा घटकर 80,800 किसान और 2,54,708 एकड़ रह गया है। यानी पिछले साल की तुलना में 11,665 किसान और 49,389 एकड़ रकबा कम हुआ है। किसानों का कहना है कि एमएफएमबी पोर्टल पर पंजीकरण को लेकर भी उन्हें परेशानी उठानी पड़ी। पोर्टल को 31 जुलाई को बंद कर दिया गया था। बाद में कुछ समय के लिए इसे दोबारा खोला गया, लेकिन तकनीकी दिक्कतों के चलते कई किसान पंजीकरण नहीं करा सके। ऐसे में जिन किसानों ने पंजीकरण कराया है, वे अब सरकारी खरीद की घोषणा का इंतजार कर रहे हैं, जबकि जिनका पंजीकरण तकनीकी कारणों से नहीं हो पाया, उनकी चिंता और बढ़ गई है। सरकार की ओर से खरीफ सीजन 2026-27 के लिए बाजरे का एमएसपी 2900 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया है। पिछले सीजन में यह दर 2775 रुपये प्रति क्विंटल थी। हालांकि, पिछले साल जिले में बाजरे की सरकारी खरीद नहीं हो सकी थी और किसानों को निजी व्यापारियों के हाथों ही फसल बेचनी पड़ी थी। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2024-25 में जिले में 1,78,027 क्विंटल बाजरा खरीदा गया था। इसके विपरीत वित्त वर्ष 2025-26 में सरकारी खरीद नहीं हुई और करीब 3,37,767 क्विंटल बाजरा निजी व्यापारियों के माध्यम से खरीदा गया।

प्रति क्विंटल के भाव पर खरीदा है। लिए। लहाजा सरकारी खरीद की घोषणा नहीं होने का सीधा असर किसानों की जेब पर पड़ता दिखाई दे रहा है।

लाडो लक्ष्मी योजना व मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना के भी होंगे पंजीकरण

जिले में आज से 14 अक्टूबर तक चलेगा सेवा सेतू अभियान, हर खंड में लगेंगे कैंप, जन-जन तक पहुंचेगी सरकार की योजनाएं

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के सेवा संकल्प अभियान के तहत महेंद्रगढ़ जिले में 20 सितंबर से 14 अक्टूबर तक सेवा सेतू अभियान के कैंप लगाए जाएंगे। इन कैंपों में सरकार की सभी योजनाओं तथा सेवाओं का लाभ लोगों को दिया जाएगा। इस दौरान

■ सीएम नायब सिंह सैनी के निर्देश पर बना पूरा कैलेंडर

जल्द मिल सके। मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना के तहत भी पात्र लाभार्थियों के आवेदन जमा किए जाएंगे, जिससे कम आय वाले परिवारों को स्वरोजगार व आर्थिक सहायता देकर उनकी आय बढ़ाई जा सके। उपायुक्त अनुपमा अंजली ने बताया कि जिला प्रशासन ने इसके लिए पूरा कैलेंडर तैयार कर लिया है और जिला नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी अतिरिक्त उपायुक्त तरुण कुमार पवारिया को सौंपी गई है।

ये है शेड्यूल

खंड महेंद्रगढ़ : अभियान की शुरुआत 20 सितंबर यानी रविवार को खंड कार्यालय महेंद्रगढ़ से होगी। इसके अगले दिन 21 सितंबर को गांव पाली की प्रजापत धर्मशाला और 22 सितंबर को गांव नांगल सिरौही के ग्राम सचिवालय में कैंप आयोजित होंगे।
खंड सतनाली : इसी दिन यानी 20 सितंबर को खंड सतनाली में भी अभियान शुरू होगा। पहले दिन खंड कार्यालय सतनाली, 21 सितंबर को सामुदायिक केंद्र सतनाली और 22 सितंबर को माधोगढ़ के वीकेडी मवन में कैंप लगेगे।
नगर पालिका, महेंद्रगढ़ : नगर पालिका क्षेत्र महेंद्रगढ़ में 20 सितंबर को नपा कार्यालय में, 21 सितंबर को मसानी स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में और 22 सितंबर को यादव धर्मशाला महेंद्रगढ़ में कैंप लगेगे।
नगर परिषद, नारनौल : 25 सितंबर से नारनौल क्षेत्र में अभियान की रफ्तार बढ़ेगी। पहले दिन नगर परिषद कार्यालय नारनौल में, 26 सितंबर को यादव धर्मशाला नारनौल में और 27 सितंबर को राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

नारनौल में कैंप आयोजित होंगे।
खंड नारनौल : इसी के साथ खंड नारनौल में 25 सितंबर को खंड कार्यालय में, 26 सितंबर को खोजना की एससी चौपाल में और 27 सितंबर को कांठी के ग्राम सचिवालय में शिविर लगेगे।
खंड सिहमा : खंड सिहमा में भी 25 सितंबर से अभियान शुरू होगा। पहले दिन खंड कार्यालय सिहमा में, 26 सितंबर को सिहमा की धर्मशाला में और 27 सितंबर को दौंगड़ा अहीर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कैंप आयोजित होंगे।
नगर पालिका, नांगल चौधरी : अक्टूबर महीने की शुरुआत के साथ दो अक्टूबर से नगर पालिका नांगल चौधरी में अभियान पहुंचेगा। लगातार तीन दिन यानी दो, तीन और चार अक्टूबर को नपा कार्यालय नांगल चौधरी में कैंप लगेगे।
खंड नांगल चौधरी : खंड नांगल चौधरी में दो अक्टूबर को नपा कार्यालय में, तीन अक्टूबर को एससी चौपाल नांगल चौधरी में और चार अक्टूबर को सहबाजपुर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शिविर लगेगे।

खंड निजामपुर : खंड निजामपुर में दो अक्टूबर को खंड कार्यालय में, चार अक्टूबर को बसीरपुर स्कूल में और पांच अक्टूबर को देवोली के पंचायत घर में कैंप आयोजित होंगे।
नगर पालिका, कनीना : अभियान का समापन चरण 10 अक्टूबर से कनीना क्षेत्र में होगा। नगर पालिका नारनौल में 10, 11 और 14 अक्टूबर को लगातार नपा कार्यालय में कैंप लगेगे।
खंड कनीना : खंड कनीना में 10 अक्टूबर को भोजवास स्थित आईटीआई भवन में, 11 अक्टूबर को धनौदा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में और 14 अक्टूबर को नपा कार्यालय कनीना में शिविर लगेगे।
नगर पालिका, अटेली मंडी : नगर पालिका अटेली मंडी में 11, 13 और 14 अक्टूबर को नपा कार्यालय अटेली में कैंप आयोजित होंगे।
खंड अटेली मंडी : खंड अटेली मंडी में 11 अक्टूबर को नपा कार्यालय अटेली में, 13 अक्टूबर को फतेहपुर की बीसी चौपाल में और 14 अक्टूबर को बांछेद के ग्राम सचिवालय में विशेष शिविर लगाए जाएंगे।

तीन मिडकैप फंड ने किया बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन

- » व्हाइटओक, एडेलवाइज़ और निप्पॉन इंडिया ने दिया खूब रिटर्न
- » निवेश से पहले जोखिम और लागत को समझना बेहद जरूरी
- » मिडकैप में ज्यादा रिटर्न की संभावना के साथ उतार-चढ़ाव भी अधिक
- » तीनों फंडों ने अलग-अलग अवधि में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा
- » पिछले प्रदर्शन को भी भविष्य की गारंटी का मानें

बिजनेस डेस्क

मिडकैप न्यूउअल फंड उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो बड़ी कंपनियों से छोटी, लेकिन स्मॉलकैप कंपनियों से अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। इनमें विकास की संभावनाएं मजबूत हो सकती हैं, लेकिन बाजार में गिरावट आने पर इनका उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है। हाल के आंकड़ों में मिडकैप सेगमेंट की रफ्तार कुछ धीमी हुई है। 10 सितंबर 2026 तक एक साल में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% रहा, जबकि तीन साल में इसका सालाना औसत रिटर्न करीब 15% रहा। ऐसे माहौल में यह देखना महत्वपूर्ण हो जाता है कि कौन-से सक्रिय मिडकैप फंड अपने बेंचमार्क से आगे रहे हैं। इविवर्टीमास्टर की 30 से अधिक फंडों की स्क्रीनिंग में तीन योजनाएं सामने आईं व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड, एडेलवाइज़ मिड कैप फंड और निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड। इस विश्लेषण में रिटर्न के साथ जोखिम-समायोजित प्रदर्शन को भी देखा गया। आंकड़े 10 सितंबर 2026 तक के हैं।

1. व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड

यह तीनों में अपेक्षाकृत नया फंड है। सितंबर 2022 में शुरू हुए इस फंड ने उपलब्ध अवधि में बेंचमार्क से काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। एक साल में फंड का रिटर्न 14.92% रहा, जबकि निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% था। तीन साल में फंड ने 21.73% सालाना रिटर्न दिया, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% रहा। इस फंड की खासियत इसका अपेक्षाकृत विविध पोर्टफोलियो है। मैक्स फाइनेंशियल सर्विसेज, भारती हेक्साकॉम, फेडरल बैंक, लॉरेस लैब्स और कोफोर्ज इसकी प्रमुख हिस्सेदारी में शामिल हैं। शीर्ष होल्डिंग का वजन भी बहुत ज्यादा नहीं है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 15.86 रही। शार्प अनुपात 0.33 और सॉर्टिनो अनुपात 0.62 रहा। ये आंकड़े बताते हैं कि उपलब्ध तीन साल की अवधि में फंड ने जोखिम के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन किया।

2. एडेलवाइज़ मिड कैप फंड

एडेलवाइज़ मिड कैप फंड का इतिहास बाकी दोनों की तुलना में लंबा है। यह फंड दिसंबर 2007 में शुरू हुआ था और इसके पास अलग-अलग बाजार परिस्थितियों का अपेक्षाकृत लंबा रिकॉर्ड है। पांच साल में इसने 18.89% और सात साल में 25.40% सालाना रिटर्न दिया। इसी अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 16.52% और 22.68% रहा। तीन साल में फंड का रिटर्न 20.65% रहा, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% था। फंड का निवेश वित्तीय कंपनियों और बाजार से जुड़ी कुछ कंपनियों की ओर अपेक्षाकृत अधिक रहा है। इसके पोर्टफोलियो में एमसीएक्स, बीएसई, फेडरल बैंक और एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक जैसी कंपनियां शामिल हैं। यही सेक्टर झुकाव इसके प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.61 रही, जो इन तीनों में सबसे अधिक थी। शार्प अनुपात 0.30 और सॉर्टिनो अनुपात 0.56 रहा। इस फंड की एक महत्वपूर्ण बात इसका लंबा ट्रैक रिकॉर्ड है। हालांकि, निवेशकों को यह भी देखना चाहिए कि मौजूदा फंड मैनेजमेंट टीम के कार्यकाल और पूरे ऐतिहासिक प्रदर्शन में कितना अंतर है।

3. निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड

निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड तीनों में सबसे पुराना है। अक्टूबर 1995 में शुरू हुआ यह फंड कई बाजार चक्रों से गुजर चुका है। इसके लंबे इतिहास में डाट-कॉम संकट, 2008 की वैश्विक वित्तीय मंदी, टेपूर वेट्टम, नोटबंदी, कोविड और मिडकैप में आई बड़ी गिरावट जैसे दौर शामिल हैं। एक साल में फंड ने 8.44% तीन साल में 17.73%, पांच साल में 18.31% और सात साल में 24.11% सालाना रिटर्न दिया। संबंधित अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 7.19%, 14.92%, 16.52% और 22.68% रहा। इससे पता चलता है कि उपलब्ध सभी प्रमुख अवधियों में फंड का रिटर्न बेंचमार्क से ऊपर रहा। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.07 रही। शार्प अनुपात 0.27 और सॉर्टिनो अनुपात 0.51 रहा। फंड का आकार करीब 39,100 करोड़ रुपये बताया गया है, जो इन तीनों में सबसे बड़ा है। बड़ा आकार एक तरफ मजबूत निवेशकों को दर्शाता है, लेकिन मिडकैप क्षेत्र में बहुत बड़े फंड के लिए छोटी कंपनियों में बड़ी हिस्सेदारी बनाना अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष योगदान व्यय अनुपात करीब 0.81% है।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

मिडकैप फंड में पिछले रिटर्न को देखकर निवेश करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। इस श्रेणी में शेयरों की कीमतों में बड़े उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। इसलिए निवेशकों को कम से कम पांच बातों पर ध्यान देना चाहिए—फंड का निवेश उद्देश्य, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, फंड मैनेजर का रिकॉर्ड, खर्च और अपने पोर्टफोलियो में मिडकैप का उचित हिस्सा। इसके अलावा फंड के आकार को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। बहुत बड़े फंड के लिए छोटी और मझौली कंपनियों में पर्याप्त हिस्सेदारी बनाना मुश्किल हो सकता है, जबकि छोटे फंड में दूसरी तरह के जोखिम हो सकते हैं।

एसआईपी निवेशकों के लिए क्या समझना जरूरी

मिडकैप फंड को आम तौर पर लंबी अवधि के निवेश के नजरिए से देखना चाहिए। बाजार में गिरावट के दौरान एसआईपी जारी रखने के लिए निवेशक में पर्याप्त जोखिम क्षमता होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, किसी फंड में पिछले तीन या पांच वर्षों में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा है, इसका अर्थ यह नहीं है कि अगले तीन या पांच वर्षों में भी ऐसा ही होगा। बाजार की परिस्थितियां, कंपनियों की कमाई, मूल्यांकन और फंड की निवेश रणनीति बदल सकती हैं। इसलिए निवेश का निर्णय केवल किसने सबसे ज्यादा रिटर्न दिया के आधार पर नहीं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि, जोखिम क्षमता और पहले से मौजूद पोर्टफोलियो को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

फंड चुनते समय रिटर्न संग जोखिम पर ध्यान दें

व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड के आंकड़े उपलब्ध छोटी अवधि में मजबूत रहे हैं, एडेलवाइज़ मिड कैप के पास लंबा और मजबूत प्रदर्शन रिकॉर्ड है, जबकि निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप का इतिहास तीनों में सबसे लंबा है। तीनों की निवेश शैली, पोर्टफोलियो संरचना, फंड का आकार और लागत अलग-अलग हैं। इसलिए इन आंकड़ों को निवेश की गारंटी या भविष्य के रिटर्न का संकेत नहीं माना जाना चाहिए। मिडकैप फंड चुनते समय रिटर्न के साथ जोखिम, खर्च, पोर्टफोलियो और निवेशकों की अपनी परिस्पति-वितरण रणनीति को भी समान महत्व देना जरूरी है।

स्मार्ट बीटा फंड : दिला सकता है बढ़िया मुनाफा, जोखिम भी ज्यादा नहीं कम लागत में बेहतर रणनीति से करें निवेश

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

न्यूउअल फंड में निवेश करने वाले लोगों के सामने अब केवल पारंपरिक इंडेक्स फंड और सक्रिय रूप से संचालित फंड ही विकल्प नहीं हैं। स्मार्ट बीटा फंड भी निवेश की एक ऐसी रणनीति है, जो पैसिव निवेश की नियम-आधारित प्रक्रिया को अलग-अलग फैक्टर के आधार पर शेयर चुनने की रणनीति से जोड़ती है। इनका उद्देश्य बाजार के पारंपरिक इंडेक्स से अलग तरीके से निवेश करना और जोखिम के मुकाबले बेहतर रिटर्न हासिल करने की कोशिश करना होता है। हालांकि, स्मार्ट बीटा का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि फंड हर समय बाजार या सामान्य इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करेगा।

साधारण इंडेक्स फंड किसी तय इंडेक्स की संरचना को दोहराने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इंडेक्स में जिस कंपनी का जितना वजन है, फंड भी लगभग उसी अनुपात में उसमें निवेश करता है। स्मार्ट बीटा फंड इससे अलग तरीके से काम करते हैं। इनमें शेयरों का चयन और उनका वजन पहले से तय नियमों के आधार पर किया जाता है। यानी फंड मैनेजर की व्यक्तिगत पसंद के बजाय किसी निर्धारित रणनीति या फैक्टर को प्राथमिकता दी जाती है। यही वजह है कि स्मार्ट बीटा को सक्रिय और निष्क्रिय निवेश के बीच की रणनीति के तौर पर देखा जाता है। इसमें सक्रिय फंड की तरह अलग-अलग विशेषताओं वाले शेयर चुने जाते हैं, लेकिन चयन प्रक्रिया नियम-आधारित होती है।

कैसे अलग होता है पोर्टफोलियो

पारंपरिक बाजार पूंजीकरण आधारित इंडेक्स में बड़ी कंपनियों का वजन उनके बाजार मूल्य के आधार पर अधिक होता है। स्मार्ट बीटा रणनीति में ऐसा जरूरी नहीं है। मान लीजिए कोई फंड क्वालिटी फैक्टर पर आधारित है। तब वह बाजार पूंजीकरण की बजाय कंपनियों की वित्तीय गुणवत्ता से जुड़े माकों के आधार पर शेयरों का चयन कर सकता है। इसी तरह मोमेंटम फंड में हाल की कीमत की चाल महत्वपूर्ण हो सकती है।

चार प्रमुख फैक्टर को समझें

- वैल्यू** : इस रणनीति में ऐसे शेयरों पर ध्यान दिया जाता है जिन्हें निर्धारित वित्तीय मानकों के आधार पर उनकी कीमत की तुलना में आकर्षक माना जाता है। इसका आधार मूल्य/कन से जुड़े आंकड़े हो सकते हैं।
- क्वालिटी** : इसमें मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों को प्राथमिकता देने की कोशिश होती है। लाभप्रदता, कर्ज, आय की स्थिरता और अन्य वित्तीय मानक इसके आधार हो सकते हैं।
- मोमेंटम** : इसमें हाल के समय में बेहतर प्रदर्शन करने वाले शेयरों की चाल को महत्व दिया जाता है। रणनीति का आधार यह होता है कि कुछ शेयरों में बनी सकारात्मक या नकारात्मक गति कुछ समय तक जारी रह सकती है।
- लो वोलेटिलिटी** : इसमें अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव वाले शेयरों पर ध्यान दिया जाता है। इसका उद्देश्य पोर्टफोलियो में बाजार की तुलना में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने की कोशिश करना होता है।

स्मार्ट बीटा रणनीति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि फैक्टर हमेशा काम नहीं करते। किसी खास रणनीति का प्रदर्शन कुछ वर्षों तक कमजोर रह सकता है। उदाहरण के लिए, तेज बाजार उलटफेर की स्थिति में मोमेंटम आधारित रणनीति को नुकसान हो सकता है। इसी तरह वैल्यू आधारित रणनीति लंबे समय तक बाजार की पसंद से बाहर रह सकती है। लो वोलेटिलिटी रणनीति भी तेजी वाले बाजार में कुछ परिस्थितियों में व्यापक इंडेक्स से अलग प्रदर्शन कर सकती है। इसलिए केवल पिछले कुछ वर्षों के रिटर्न देखकर स्मार्ट बीटा फंड का चुनाव करना उचित नहीं माना जाना चाहिए।



निवेशकों को क्या फायदे मिलेंगे

- नियम-आधारित निवेश : शेयरों के चयन के लिए पहले से निर्धारित नियम होते हैं। इससे निवेश प्रक्रिया अपेक्षाकृत व्यवस्थित और पारदर्शी रहती है।
- कम लागत की संभावना : सक्रिय रूप से संचालित फंड की तुलना में स्मार्ट बीटा फंड की लागत आम तौर पर कम हो सकती है, हालांकि हर फंड का वास्तविक खर्च अलग होता है।
- विशेष रणनीति का विकल्प : निवेशक वैल्यू, क्वालिटी, मोमेंटम या लो वोलेटिलिटी जैसे किसी खास फैक्टर पर आधारित रणनीति चुन सकते हैं।
- पोर्टफोलियो में विविधता : पारंपरिक इंडेक्स से अलग कंपनियों और अलग वजन वाली कंपनियों में निवेश होने के कारण यह निवेश पोर्टफोलियो में एक अलग रणनीतिक एक्सपोजर दे सकता है।

सेक्टर या शेयरों का झुकाव बढ़ेगा

फैक्टर आधारित निवेश का एक दूसरा जोखिम कंसंट्रेशन है। किसी खास नियम के कारण पोर्टफोलियो में कुछ सेक्टर या कंपनियों की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है। ऐसे में यदि उस सेक्टर या कंपनियों के समूह का प्रदर्शन कमजोर रहता है तो पूरे फंड के रिटर्न पर असर पड़ सकता है। इसलिए फंड की शीर्ष होल्डिंग, सेक्टर आवंटन और इंडेक्स की निर्माण पद्धति को समझना जरूरी है।

बार-बार रीबैलेंसिंग से बड़ेगी लागत

कुछ स्मार्ट बीटा रणनीतियों में समय-समय पर पोर्टफोलियो को रीबैलेंस किया जाता है। यानी तय नियमों के अनुसार कुछ शेयरों का वजन बढ़ाया या घटाया जाता है और कुछ शेयरों को शामिल अथवा बाहर किया जाता है। मोमेंटम जैसी रणनीतियों में यह बदलाव अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। ज्यादा बदलाव का मतलब लेनदेन की लागत और पोर्टफोलियो में शेयरों के आने-जाने की दर बढ़ना हो सकता है। इसका असर फंड के वास्तविक रिटर्न पर पड़ सकता है।

सैलरी आते ही पैसा खत्म हो जाता है तो बदलें कुछ आदतें

» कमाई कितनी है, इससे ज्यादा जरूरी है उसका सही बंटवारा

» पहले बचत, फिर खर्च और निवेश का नियम अपनाएं

» महीने के आखिर में होने वाली पैसों की तंगी से बच सकेंगे



माह की शुरुआत में बनाएं बजट

सैलरी आने के बाद बिना योजना के खर्च शुरू करना बजट बिगड़ाने का सबसे आसान तरीका है। इसलिए महीने की शुरुआत में ही जरूरी खर्चों की सूची बनाएं। सबसे पहले किराया, ईंधन, बिजली-पानी, राशन, स्कूल फीस, बीमा प्रीमियम और दूसरी अनिवार्य जरूरतों के लिए रकम अलग करें। इसके बाद यात्रा, खरीदारी, मनोरंजन और बाहर खाने जैसे खर्चों के लिए सीमा तय करें। बजट का मतलब हर खर्च रोकना नहीं है। इसका उद्देश्य यह तय करना है कि किस मद में कितना पैसा खर्च किया जा सकता है। यदि महीने की शुरुआत में ही 50,000 की आय में से 25,000 जरूरी खर्चों के लिए निर्धारित हैं और 10,000 रुपये बचत या निवेश के लिए अलग कर दिए गए हैं, तो बाकी 15,000 ही वैकल्पिक खर्चों के लिए उपलब्ध होंगे। इससे महीने के बीच में पैसा खत्म होने की संभावना कम होगी।

छोटे खर्चों को नजरअंदाज न करें

बजट अवसर किसी एक बड़े खर्च से नहीं, बल्कि कई छोटे खर्चों से बिगड़ता है। रोज की कॉफी, ऑनलाइन खाना, कैश, छोटी-मोटी खरीदारी, मनोरंजन और ऐसे डिजिटल सब्सक्रिप्शन जिनका इस्तेमाल बहुत कम होता है इनकी कुल रकम महीने के अंत में काफी बड़ी हो सकती है। इसलिए कम से कम एक महीने तक हर खर्च लिखने की आदत डालें। मोबाइल के नोट्स, डायरी या किसी खर्च ट्रैकिंग ऐप का इस्तेमाल किया जा सकता है। महीने के अंत में खर्चों को तीन हिस्सों में बांटे। जरूरी, उपयोगी और गैर-जरूरी। इसके बाद देखें कि किन खर्चों को कम किया जा सकता है। मान लीजिए रोजाना 100 का छोटा खर्च हो रहा है। महीने में यह करीब 3,000 और सालभर में करीब 36,500 हो सकता है।

इमरजेंसी फंड को प्राथमिकता

बजट और बचत के साथ आपातकालीन कोष यानी इमरजेंसी फंड भी जरूरी है। अचानक नौकरी में रुकावट, घर से जुड़ी जरूरत, वाहन की मरम्मत या कोई अप्रत्याशित खर्च आने पर अगर अलग पैसा नहीं है तो व्यक्ति को निवेश तोड़ना पड़ सकता है या क्रेडिट कार्ड और कर्ज पर निर्भर होना पड़ सकता है। इमरजेंसी फंड का उद्देश्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि जरूरत के समय पैसा उपलब्ध रखना है। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से निकाली जा सके।

निवेश को आदत बनाएं

सिर्फ पैसा बचाकर रखना पर्याप्त नहीं है। लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए बचत के साथ निवेश भी जरूरी हो सकता है। निवेश का विकल्प चुनते समय लक्ष्य, अवधि और जोखिम क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। नियमित निवेश के लिए एसआईपी एक तरीका हो सकता है। इसमें हर महीने एक तय रकम न्यूउअल फंड योजना में निवेश की जाती है। हालांकि, न्यूउअल फंड बाजार जोखिम के अधीन होते हैं और रिटर्न की गारंटी नहीं होती।



सैलरी का आसान बंटवारा करें

- **जरूरी खर्च** : घर, राशन, बिजली, ईंधनआई और दूसरी अनिवार्य जरूरतें।
- **बचत** : भविष्य की जरूरतों और बड़े खर्चों के लिए।
- **निवेश** : लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए।
- **वैकल्पिक खर्च** : घूमना, मनोरंजन, खरीदारी और दूसरी इच्छाओं पर खर्च।
- इस बंटवारे को अपनी वास्तविक आय और जिम्मेदारियों के अनुसार बदला जा सकता है।

क्रेडिट कार्ड और ईएमआई पर भी रखें नजर

अगर हर महीने सैलरी का बड़ा हिस्सा पुरानी ईएमआई या क्रेडिट कार्ड भुगतान में चला जाता है तो बचत और निवेश के लिए रकम निकालना मुश्किल होगा। इसलिए नए कर्ज लेने से पहले यह देखना जरूरी है कि उसकी मासिक किस्त बजट पर कितना दबाव डालेगी। क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल सुविधा के लिए किया जा सकता है, लेकिन ऐसा खर्च नहीं करना चाहिए जिसे समय पर चुकाना मुश्किल हो। ब्याज और लेट फीस जैसी लागत छोटे खर्च को भी महंगा बना सकती है।

सिर्फ हर महीने निवेश करना काफी नहीं, सही फंड का चयन और लंबी अवधि तक अनुशासन भी जरूरी

एसआईपी से उम्मीद के मुताबिक नहीं बन रहा पैसा, तो कुछ गलतियों से बचें

सुझाव

बिजनेस डेस्क

व्यवस्थित निवेश योजना यानी एसआईपी आज छोटे और बड़े निवेशकों के बीच लंबी अवधि में संपत्ति बनाने का लोकप्रिय माध्यम बन चुकी है। हर महीने तय राशि निवेश करने की सुविधा के कारण नौकरीपेशा और सौमित्र आय वाले लोग भी धीरे-धीरे बड़ा कोष तैयार करने की उम्मीद रखते हैं। लेकिन कई निवेशकों की शिकायत रहती है कि वर्षों तक एसआईपी चालने के बाद भी पैसा उनकी उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़ रहा। ऐसे में वे अक्सर फंड, बाजार या फंड प्रबंधक को जिम्मेदार मान लेते हैं। अक्सर में एसआईपी कोई ऐसा निवेश उत्पाद नहीं है, जो निश्चित या गारंटीशुद्ध रिटर्न देता हो। यह केवल नियमित अंतराल पर निवेश करने का तरीका है। निवेश का अंतिम परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि हर महीने कितनी राशि लगाई जा रही है, किस प्रकार के न्यूउअल फंड का चयन किया गया है, निवेश का लक्ष्य और अवधि क्या है, बाजार की स्थिति कैसी है और निवेशक किसने समस्त तक लगातार निवेश बनाए रखा है। यदि एसआईपी उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़े रही है तो बाहर निकलने से पहले निवेशकों को अपनी रणनीति की इन पांच महत्वपूर्ण कमियों की जांच करनी चाहिए।

लक्ष्य के मुकाबले बहुत कम

है एसआईपी की राशि

एसआईपी में सबसे आम गलती यह होती है कि निवेशक पहले यह तय करता है कि वह हर महीने कितनी रकम आसानी से बचा सकता है, लेकिन यह नहीं देखता कि उसके वित्तीय लक्ष्य को हासिल करने के लिए वास्तव में कितने लक्ष्य की जरूरत है। 2,000 या 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी निवेश की अच्छी शुरुआत हो सकती है, लेकिन हर लक्ष्य के लिए यह रकम पर्याप्त नहीं होती। मसलन, यदि कोई व्यक्ति पांच साल में 50 लाख या एक करोड़ रुपये का कोष बनाना चाहता है, तो केवल 5,000 रुपये मासिक निवेश से लक्ष्य तक पहुंचना संभव नहीं होगा। इसलिए निवेश की शुरुआत करते समय सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए कि हर महीने कितना निवेश कर सकता हूँ, बल्कि यह होना चाहिए कि अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कितना निवेश करना जरूरी है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि कोई निवेशक पांच साल तक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मान लिया जाए, तो उसके पास करीब 4.1 लाख रुपये का कोष बन सकता है। यदि उसका लक्ष्य पांच लाख रुपये है तो वह लगभग 90 हजार रुपये पीछे रह जाएगा। इसी अनुमान रिटर्न और औसत में पांच लाख रुपये के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए करीब 6,100 रुपये मासिक निवेश की जरूरत पड़ सकती है। आय बढ़ने के साथ एसआईपी की रकम बढ़ानी भी जरूरी है।

लक्ष्य और अवधि के हिसाब

से गलत फंड चुनना

हर न्यूउअल फंड हर निवेशक और हर लक्ष्य के लिए उपयुक्त नहीं होता। फंड चुनते समय केवल ज्यादा रिटर्न देखने के बजाय निवेश की अवधि, लक्ष्य और जोखिम उठाने की क्षमता को प्राथमिकता देनी चाहिए। उदाहरण के लिए, तीन साल बाद घर खरीदने के लिए पैसा जुटा रहे निवेशक और 20 साल बाद सेवानिवृत्ति के लिए निवेश करने वाले व्यक्ति की रणनीति एक जैसी नहीं हो सकती। लंबी अवधि वाले निवेशक अपेक्षाकृत अधिक उतार-चढ़ाव सहन कर सकते हैं, जबकि कम अवधि के लक्ष्य के लिए बहुत अधिक जोखिम वाले इविवर्टी फंड परेशानी पैदा कर सकते हैं। मिड और स्मॉल कैप शेयरों में ज्यादा निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर वृद्धि की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें उतार-चढ़ाव भी काफी अधिक हो सकता है।

पिछले शानदार रिटर्न के पीछे भागना

कई निवेशक ऐसे न्यूउअल फंड चुन लेते हैं, जिन्होंने पिछले एक, तीन या पांच साल में सबसे ज्यादा रिटर्न दिया हो। लेकिन किसी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। आज सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाला फंड आने वाले वर्षों में भी शीर्ष पर रहेगा, यह जरूरी नहीं है। इसी तरह कुछ समय के लिए कमजोर प्रदर्शन करने वाला फंड भी हर स्थिति में खराब निवेश साबित नहीं होता। बाजार के अलग-अलग दौर में विभिन्न फंडों का प्रदर्शन बदल सकता है। निवेशकों को किसी फंड का चयन करते समय यह देखना चाहिए कि उसका प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में कितना स्थिर रहा है।

बाजार को समय देने के बजाय बाजार का समय पकड़ने की कोशिश

एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत नियमित निवेश और अनुशासन है। इसके बावजूद कई निवेशक बाजार बढ़ने पर उत्साह से निवेश करते हैं, लेकिन बाजार गिरे तो एसआईपी रोक देते हैं। उन्हें लगता है कि बाजार और नीचे आने पर दोबारा निवेश शुरू करेंगे। समस्या यह है कि बाजार का सबसे निचला स्तर और सबसे ऊंचा स्तर पहले से तय करना बेहद मुश्किल है। कब बाजार गिरेगा और कब तेजी से ऊपर जाएगा, इसका सटीक अनुमान लगाना आसान नहीं है। नियमित एसआईपी में बाजार की अलग-अलग स्थितियों में निवेश जारी रहता है।

क्या करें निवेशक

यदि आपको एसआईपी उम्मीद के मुताबिक आने नहीं बढ़ रही है तो सबसे पहले घबराकर निवेश बंद करने या फंड बेचने की जरूरत नहीं है। अपनी पूरी निवेश योजना की समीक्षा करें। देखें कि एसआईपी की राशि लक्ष्य के अनुरूप है या नहीं, फंड आपके निवेश अवधि और जोखिम क्षमता के हिसाब से सही है या नहीं और कहीं आप बार-बार बाजार के उतार-चढ़ाव के आधार पर निवेश के फैसले तो नहीं बदल

बहुत जल्दी बड़े रिटर्न की उम्मीद करना

एसआईपी को कुछ लोग जल्दी पैसा बनाने का साधन समझ लेते हैं, जबकि यह मुख्य रूप से लंबी अवधि में अनुशासित निवेश की रणनीति है। शुरुआती वर्षों में कोष की वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी दिखाई दे सकती है, क्योंकि निवेशित राशि अभी बहुत बड़ी नहीं होती। समय के साथ नियमित निवेश जारी रहने पर कुल निवेश राशि बढ़ती है और यदि निवेश को बढ़ने का पर्याप्त समय मिलता है तो चक्रवृद्धि का प्रभाव भी अधिक दिखाई दे सकता है। निवेश से होने वाली संभावित कमाई यदि निवेश में बनी रहती है, तो वह भी आगे रिटर्न पैदा करने में योगदान दे सकती है।

रहे। जरूरत पड़ने पर एसआईपी की रकम बढ़ाई जा सकती है, फंड चयन की समीक्षा की जा सकती है और अलग-अलग निवेश माध्यमों में राशि के बंटवारे पर भी विचार किया जा सकता है। कोई एक ऐसा जादूई फंड नहीं है, जो हर समय सबसे बेहतर रिटर्न दे। बेहतर रणनीति वही है, जो आपके लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुरूप हो और जिसे आप लंबे समय तक अनुशासन के साथ जारी रख सकें।

खबर संक्षेप

विद्यार्थियों ने लिया नशे से दूर रहने का संकल्प

नारनौल। राजकीय महाविद्यालय कृष्णनगर में प्राचार्या डॉ. सुमन यादव की अध्यक्षता में सेवा संकल्प अभियान के तहत नशा मुक्त भारत अभियान पर स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बड़-चढ़कर भाग लिया। प्राचार्या डॉ. सुमन यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए नशे के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभावों पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने न केवल रचनात्मक स्लोगनों के माध्यम से समाज में एक सशक्त और सकारात्मक संदेश देने का कार्य किया, बल्कि यह संकल्प भी लिया कि वे स्वयं नशे से दूर रहेंगे और अपने परिवार तथा समाज को भी इसके नकारात्मक प्रभावों के बारे में विस्तार से जागरूक करेंगे।

महिलाओं को कुपोषण के बारे में किया जागरूक

नारनौल। हमारी आंगनवाड़ी हमारी जिम्मेदारी थीम के तहत शहर के वार्ड सात स्थित आंगनवाड़ी केंद्र पर आंगनवाड़ी वर्कर रामरती की मौजूदगी में पोषण माह का आयोजन किया। कार्यक्रम में पोषण अभियान की ब्लॉक कॉर्डिनेटर प्रिया ने उपस्थित महिलाओं को जागरूक करते हुए बताया कि महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा एस आयोजन का मुख्य उद्देश्य सामुदायिक सहभागिता के जरिए विभाग की कल्याणकारी योजनाओं को सफल बनाना और गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों को कुपोषण से बचाना है।

पुलिस के सहयोग से नशा कारोबार को करवाएंगे बंद
बड़ाबाग के लोग वार्ड को नशामुक्त बनाने के लिए चलाएंगे अभियान

बैठक में मोहल्ला के लोगों ने कहा कि क्षेत्र में नशीले पदार्थों की बिक्री और सेवन पर रोक लगाने के लिए सभी को एकजुट होकर काम करना होगा

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

नशा के खिलाफ मंगलवार शाम शहर के मोहल्ला बड़ाबाग वासी लोगों ने हंगामा खड़ा किया था। आरोप था कि पुलिस कर्मों के सहयोग से उनके क्षेत्र में नशा सप्लाई किया जा रहा है। बाद में मेडिकल होने पर आरोपित पुलिस कर्मों अल्कोहल की मात्रा मिली और उसके सस्पेंड कर दिया गया। यहीं नहीं, सिटी थाना प्रभारी का तबादला भी एसपी ने किया। अब इसी क्षेत्र के लोग अपने वार्ड को नशा मुक्त करने के लिए फिर से एकजुट होने लगे हैं।

शुक्रवार शाम यह लोग बड़ाबाग में एकत्रित हुए और सामूहिक तौर पर नशा के खिलाफ अभियान चलाने का फैसला लिया गया। बैठक की अध्यक्षता गोशाला के पूर्व प्रधान सुरेश यादव ने की। इस दौरान पूर्व पार्षद राम सिंह सैनी सहित वार्ड के कई लोग मौजूद रहे।



नारनौल। बैठक में हिस्सा लेते हुए।

क्लासएप ग्रुप बनाने का निर्णय

इस दौरान वार्ड के लोगों ने एक क्लासएप ग्रुप बनाने का निर्णय लिया। ग्रुप के माध्यम से क्षेत्र में नशीले पदार्थों की बिक्री करने वाले लोगों पर नजर रखी जाएगी। संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी मिलने पर पुलिस को सूचना दी जाएगी, ताकि समय रहते कार्रवाई हो सके। क्षेत्रवासियों ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य किसी व्यक्ति को परेशान करना नहीं, बल्कि वार्ड में नशे के कारोबार पर रोक लगाकर युवाओं और आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित एवं नशामुक्त वातावरण उपलब्ध कराना है। लोगों ने अभियान को लगातार जारी रखने और अधिक से अधिक लोगों को इससे जोड़ने का निर्णय लिया गया। इस मौके पर हैफेड के पूर्व मैनेजर विशम्बर दयाल सैनी, गोपाल गऊशाला के पूर्व प्रधान सुरेश यादव घाटसेर, पूर्व पार्षद रामसिंह सैनी, देवेन्द्र जयराम, अर्जन, नेतराम, ताराचंद, जगमाल, हरिराम सैनी, जगदीश, राजू यादव, कंवरीसंह, गिरधारी, रामिनवास गुर्जर, सतीश अग्रवाल, संजय अग्रवाल सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

बैठक में मोहल्ला के लोगों ने कहा कि क्षेत्र में नशीले पदार्थों की बिक्री और सेवन पर रोक लगाने के लिए सभी को एकजुट होकर काम करना होगा। इसके साथ ही जो लोग किसी भी प्रकार के नशे का सेवन कर रहे हैं, उन्हें समझाकर नशा छोड़ने के

लिए प्रेरित किया जाएगा। ऐसे लोगों की हर संभव मदद करने पर भी सहमति बनी, ताकि वे नशे की लत से बाहर आ सकें।

बैठक में सिटी थाना पुलिस की टीम भी पहुंची। थाना प्रभारी ने क्षेत्रवासियों को आश्वासन दिया कि

नशे के खिलाफ चलाए जा रहे इस अभियान में पुलिस की ओर से पूरा सहयोग किया जाएगा। लोगों ने पुलिस के साथ मिलकर नशे की अवैध बिक्री करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करवाने की बात कही।

फोटो: हरिभूमि

एसजीएफआई के स्टेट टूर्नामेंट में आरपीएस का जलवा

महेन्द्रगढ़। सिरसा में गत 16 से 18 सितंबर तक आयोजित एसजीएफआई स्टेट गर्ल्स बास्केटबॉल टूर्नामेंट में आरपीएस महेन्द्रगढ़ की अंडर-19 गर्ल्स टीम ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए तीसरा स्थान प्राप्त कर विद्यालय के साथ-साथ पूरे जिले का नाम रोशन किया है। टूर्नामेंट के संदर्भ में जानकारी देते हुए विद्यालय के खेल प्रशिक्षक राजकुमार यादव, बास्केटबॉल कोच धर्मवीर व राकेश ने बताया कि इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रदेश के प्रत्येक जिले की सर्वश्रेष्ठ टीमों ने भाग लिया था। कड़े मुकाबले और कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच आरपीएस की बेटियों ने अपने शानदार खेल, तालमेल और अनुशासन के दम पर कांस्य पदक हासिल किया, जो महेन्द्रगढ़ जिले के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। खिलाड़ियों की इस ऐतिहासिक सफलता पर आरपीएस ग्रुप के सीईओ इंजीनियर मनोहर राव एवं प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर ग्रुप की चेरयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि हमारी बेटियों ने खेल के मैदान में अद्वितीय कौशल और अनुशासन का परिचय देकर यह साबित कर दिया है कि प्रतिभा किसी पहचान की मोहताज नहीं होती।



नक्षत्र कालेज सीनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करेंगी तपस्या गहलावत

हरिभूमि न्यूज ►► महेन्द्रगढ़

नक्षत्र विद्यापीठ कॉलेज खुडाना की बीपीएड प्रथम वर्ष की छात्रा एवं प्रतिभावान पहलवान तपस्या गहलावत का सीनियर वर्ल्ड रेसलिंग चैंपियनशिप-2026 के लिए भारतीय टीम में चयन हुआ है। नई दिल्ली में आयोजित चयन ट्रायल में तपस्या ने 62 किलोग्राम भार वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कर यह उपलब्धि हासिल की। अब वह 24 अक्टूबर से एक नवंबर तक कजाकिस्तान के अस्ताना में आयोजित होने वाली सीनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। तपस्या इससे पहले भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर



महेन्द्रगढ़। तपस्या गहलावत का मनोबल बढ़ाते हुए। फोटो: हरिभूमि

शानदार प्रदर्शन कर चुकी हैं। उन्होंने वियतनाम में आयोजित अंडर-23 एशियन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल किया। वर्ष 2025 में बुलगारिया में हुई अंडर-20 वर्ल्ड रेसलिंग चैंपियनशिप तथा वर्ष 2024 में बैंकॉक में आयोजित एशियन अंडर-20 चैंपियनशिप में भी उन्होंने स्वर्ण पदक जीते थे।

तपस्या सोनीपत स्थित युद्धवीर अखाड़ा में प्रशिक्षण ले रही हैं। उनके प्रशिक्षक कुलवीर राणा और सोमा राणा हैं। प्रो रेसलिंग में भी उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्लेयर ऑफ द मैच और फाइटर् ऑफ द मैच जैसे पुरस्कार प्राप्त किए तथा यूपी डोमिनैन्टर्स टीम का प्रतिनिधित्व किया।

श्री गणेश उत्सव मंडल के 30वें वार्षिक महोत्सव के तहत श्री सत्यनारायण मंदिर में लगाया शिविर
गणेश उत्सव में 61ने किया रक्तदान, मानव सेवा का दिया संदेश

■ श्रद्धालुओं ने गणेश जी की आरती कर सुख-समृद्धि और शांति की कामना की

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

श्री गणेश उत्सव मंडल की ओर से आयोजित 30वें वार्षिक महोत्सव के तहत शनिवार को श्री सत्यनारायण मंदिर परिसर में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में शहरवासियों, श्रद्धालुओं और मंडल के सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लेते हुए जरूरतमंद मरीजों के लिए स्वेच्छा से रक्तदान किया। शिविर में कुल 61 रक्तदाताओं ने



नारनौल। रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। मंडल के प्रधान सुनील मराठा ने बताया कि रक्तदान शिविर में रेडक्रॉस सोसायटी और सिविल अस्पताल नारनौल की टीम का

सहयोग रहा। युवाओं सहित विभिन्न वर्गों के लोगों ने शिविर में बड़-चढ़कर हिस्सा लिया। मंडल की ओर से रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए उनका

आभार जताया गया। रक्तदाताओं ने कहा कि रक्तदान किसी जरूरतमंद वर्गों के लोगों को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए लोगों को इस पुनीत कार्य के लिए आगे आना चाहिए।

शिविर के सफल आयोजन पर मंडल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सभी 61 रक्तदाताओं, मुख्य यजमान आनंद अग्रवाल तथा आयोजन में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का आभार जताया। मंडल ने भविष्य में भी धार्मिक आयोजनों के साथ सामाजिक एवं जनसेवा के कार्य निरंतर जारी रखने का संकल्प दोहराया।

विधि-विधान से हुई गणेश जी की पूजा-अर्चना

रक्तदान शिविर के साथ श्री गणेश उत्सव के तहत भगवान श्री गणेश जी की आरती भी श्रद्धापूर्वक कराई गई। आरती के मुख्य यजमान आनंद अग्रवाल रहे। उन्होंने विधि-विधान के साथ भगवान गणेश की पूजा-अर्चना की और आरती में भाग लिया। इस दौरान मंदिर परिसर में मौजूद श्रद्धालुओं ने भगवान गणेश से

परिवार और समाज की सुख-समृद्धि, सुखहाली एवं शांति की कामना की। मंडल के संरक्षक सुनील मराठा ने कहा कि श्री गणेश उत्सव मंडल का 30वां वार्षिक महोत्सव धार्मिक आस्था के जीवन को बचाने में मदद मिल सकती है। इसलिए अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान जैसे सामाजिक एवं पुनीत कार्यों में भाग लेना चाहिए।

जताया आभार

शिविर के सफल आयोजन पर मंडल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सभी 61 रक्तदाताओं, मुख्य यजमान आनंद अग्रवाल तथा आयोजन में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का आभार जताया। मंडल ने भविष्य में भी धार्मिक आयोजनों के साथ सामाजिक एवं जनसेवा के कार्य निरंतर जारी रखने का संकल्प दोहराया।

विद्या देवी स्कूल में प्रतिभाओं को किया सम्मानित

हरिभूमिन्यूज ►► नारनौल

विद्या देवी इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने खेल जगत में शानदार उपलब्धि हासिल करते हुए विद्यालय के साथ-साथ जिले का नाम भी गौरवान्वित किया है। एसजीएफआई हरियाणा राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में विद्यालय के प्रतिभावान खिलाड़ियों गर्वित व नैतिक ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पदक अपने नाम किए।

गर्वित ने अंडर-19 ट्रिपल जंप में स्वर्ण पदक व नैतिक ने अंडर-19 लॉन्ग जंप में रजत पदक हासिल किया। इन शानदार उपलब्धियों के उपलक्ष्य में विद्यालय की ओर से प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि एईओ विक्रम, एथलेटिक्स सचिव प्रदीप, विशिष्ट



नारनौल। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

अतिथि प्रवीण प्रिंसिपल महिला महाविद्यालय अटेली व कैप्टन हंसराज ने विशेष रूप से शिरकत कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में विद्यालय के अध्यक्ष तेजपाल यादव व सचिव का विद्या यादव भी उपस्थित रहे। विद्यालय प्रबंधन की ओर से दोनों खिलाड़ियों को मोमेंटो व नकद

पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही खिलाड़ियों के माता-पिता को भी सम्मानित कर उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। खिलाड़ियों को इस उपलब्धि पर अटेली मंडी में भव्य रैली भी निकाली गई। विद्यालय डायरेक्टर विक्रान्त यादव व प्रिंसिपल राजकुमार ने खिलाड़ियों को बधाई दी।

यदुवंशी कॉलेज ने जीता कबड्डी टूर्नामेंट

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज की कबड्डी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए केएलपी कॉलेज रेवाड़ी को पराजित कर अंतर महाविद्यालय कबड्डी टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम किया। यह प्रतियोगिता राजकीय महाविद्यालय खरखड़ा की ओर से आयोजित की गई थी। डीपी बाबूलाल के नेतृत्व में यदुवंशी डिग्री कॉलेज की टीम ने पूरे टूर्नामेंट में उत्कृष्ट खेल भावना, अनुशासन और शानदार टीमवर्क का प्रदर्शन किया। फाइनल मुकाबले में टीम ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए केएलपी कॉलेज रेवाड़ी को हराकर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेरयरमैन राव बहादुर सिंह ने विजेता टीम को बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की खेल प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए महाविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। प्राचार्य डॉ. नवीन अदलखा व उप-प्राचार्य डॉ. सोनल यादव ने टीम को शानदार उपलब्धि पर बधाई दी।



गुजरवास की पलक ने नेट जेआरएफ में हासिल किया 88वां रैंक

मंडी अटेली। गुजरवास की बेटी पलक अग्रवाल ने नेट जेआरएफ सीएसआईआर में 88वीं रैंक हासिल की है। पलक पुत्री संजय कुमार अग्रवाल वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय में एमएससी जूलॉजी द्वितीय वर्ष की छात्रा हैं। उन्होंने एमएससी प्रथम वर्ष के दौरान ही यह परीक्षा उत्तीर्ण की। छात्रा पलक ने कहा कि यह सफलता माता-पिता व गुरुजनों के आशीर्वाद का परिणाम है। उन्होंने बताया कि उनका लक्ष्य शोध के क्षेत्र में कार्य करना है।



सूरज कॉलेज की दो छात्राएं टॉप टेन में शामिल



तमन्ना



सोनम

महेन्द्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर (रेवाड़ी) द्वारा बीकॉम के चौथे सेमेस्टर का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा, जिसमें बीकॉम की छात्रा सोनम पुत्री रमेश कुमार ने 9.50 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में नौवां एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में विधि यादव पुत्री संजय कुमार ने 9.00 एसजीपीए लेकर कॉलेज में द्वितीय एवं रिया पुत्री विनोद यादव ने 8.20 एसजीपीए लेकर कॉलेज में तृतीय स्थान प्राप्त किया। पूजा पुत्री सत्ववीर ने 8.10 एसजीपीए प्राप्त किया। इसी के साथ बीसीए के चौथे सेमेस्टर का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें छात्रा तमन्ना पुत्री नरेंद्र ने 9.20 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में दसवां एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सुमन पुत्री अरुण महला ने 9.00 एसजीपीए लेकर कॉलेज में द्वितीय स्थान एवं टीना पुत्री मनोज कुमार एवं पर्व शर्मा पुत्र मुकेश ने 8.70 एसजीपीए लेकर कॉलेज में तृतीय स्थान प्राप्त किया। रोहित कुमार पुत्र राज कुमार ने 8.40 एसजीपीए, रजनी पुत्री निरंजन कुमार ने 8.40 एसजीपीए, पंकज पुत्र दीपचंद ने 8.00 एसजीपीए प्राप्त किये। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। कॉलेज के निदेशक संदीप प्रसाद ने भी परिणाम पर खुशी जाहिर करते हुए विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

उर्वरक कंपनियों के दबाव में दुकानदार, इधर उधर भटकने को मजबूर किसान: ताखर

हरिभूमि न्यूज ►► नांगल चौधरी

रबी सीजन की बिजार्ई से पहले खाद की उपलब्धता को लेकर किसानों की चिंता बढ़ने लगी है। बाजार में डीएपी खाद की किल्लत को लेकर जननायक जनता पार्टी के हलका प्रधान एडवोकेट प्रमोद ताखर ने सरकार पर किसानों की समस्या पर खाद-बीज उपलब्ध कराने में विफल रहने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि अगले महीने से सरसों की बिजार्ई शुरू होनी है और किसान अभी से डीएपी की व्यवस्था करने में जुटे हैं, लेकिन बाजार में पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि जिन दुकानों पर डीएपी उपलब्ध है, वहां किसानों को

बाजरे की खरीद का इंतजार, गांवों में सौदागर हुए सक्रिय



ताखर ने कहा कि क्षेत्र के किसानों ने बाजरे की उपज निकालना आरंभ कर दिया और अब उसे मंडी में समर्थन मूल्य पर बेचने की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन अभी तक प्रशासन की ओर से मंडियों में खरीद को लेकर पर्याप्त तैयारियां नजर नहीं आ रही हैं। जिस कारण गांवों में औने-पौने भावों में बाजरा खरीदने के लिए सौदागर सक्रिय हो गए हैं।

खाद के साथ अन्य उत्पाद खरीदने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इससे किसानों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आरोप लगाया कि खाद की कमी का फायदा उठाकर कालाबाजारी को बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने प्रशासन से खाद की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ-साथ दुकानों पर

निरगनी बढ़ाने की मांग की। उन्होंने कहा कि किसान पहले ही मौसम और फसल लागत जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में बिजार्ई के समय खाद के लिए भटकना उनकी परेशानी को और बढ़ा रहा है। किसानों के निर्धारित दरों पर पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराना प्रशासन की जिम्मेदारी है।



प्रकृति का अंधाधुन इस्तेमाल कर किया जैव विविधता में खतरा उत्पन्न: देशराज

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जेलफ में प्राचार्य लोकेश कुमार की अध्यक्षता व जिला जैव विविधता समन्वयक देशराज के नेतृत्व में जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिला समन्वयक देशराज ने कहा कि आज मानव अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति का अंधाधुन इस्तेमाल करके जैव विविधता में खतरा उत्पन्न कर रहा है। यदि हमारी जैव विविधता समृद्ध होगी, तो ही हमारा जीवन सुखदायक होगा। इस पृथ्वी पर सभी जीव जंतुओं को समान रूप से रहने का अधिकार है। हमें पशु पक्षियों, जीव जंतुओं पर दया करके उनका संरक्षण करना चाहिए।

सूचना
मै. प्रेमचंद पुत्र मूलाराम, निवासी ढाणी किरारोद अरुणगन, तह. नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ बयान करता हूँ कि मेरे पुत्र पवन कुमार व आशीष और पुत्रवधु नीलम व प्रीति मेरे कहने व सुनने से बाहर हैं। अपनी मनमानी करते हैं। मैं पुत्र पवन कुमार व आशीष और पुत्रवधु नीलम व प्रीति इन सभी को अपना चले अचल संपत्ति से बेदखल करता हूँ। इनसे लेनेदेने करने वाला स्वयं निम्मेवार होगा। मेरे व मेरे बची परिवार के सदस्यों की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

रेवाड़ी-रींगस के बीच 21 व 22 सितंबर को चलेंगी 2 अनारक्षित स्पेशल ट्रेनें

■ नारनौल-अटेली समेत छोटे स्टेशनों के यात्रियों को मिलेगी राहत

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए रेवाड़ी-रींगस-रेवाड़ी के बीच दो दिन अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा संचालित करने का निर्णय लिया है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित सुदर्शन के अनुसार गाड़ी संख्या 09717

रेवाड़ी-रींगस अनारक्षित स्पेशल ट्रेन 21 और 22 सितंबर को दो ट्रिप संचालित होगी। यह ट्रेन रेवाड़ी से सुबह 10:30 बजे रवाना होकर दोपहर 2 बजे रींगस पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 09718 रींगस-रेवाड़ी अनारक्षित स्पेशल ट्रेन भी 21 और 22 सितंबर को दो ट्रिप संचालित होगी। यह ट्रेन रींगस से दोपहर 2:55 बजे रवाना होकर शाम 6:40 बजे रेवाड़ी पहुंचेगी। इस स्पेशल ट्रेन के संचालन से रेवाड़ी, अटेली, नारनौल, निजामपुर सहित



नारनौल। रेलवे स्टेशन।

फोटो : हरिभूमि

मार्ग के अन्य स्टेशनों से यात्रा करने वाले यात्रियों को अतिरिक्त रेल सुविधा मिलेगी। अलवर स्टेशन यार्ड में फुट

ओवर ब्रिज पर तकनीकी कार्य के लिए रेलवे की ओर से ब्लॉक लिया जाएगा। इसके चलते 19 से 22 सितंबर तक कई रेल सेवाएं

प्रभावित रहेंगी। रेवाड़ी से जुड़ी ट्रेनों का संचालन 22 सितंबर को आंशिक रूप से रह रहेगा। रेलवे के अनुसार गाड़ी संख्या 59630 फुलरा-रेवाड़ी 22 सितंबर को फुलेरा से रवाना होकर बांदीकुई तक ही चलेगी। बांदीकुई से रेवाड़ी के बीच इसका संचालन रह रहेगा। वहीं गाड़ी संख्या 59629 रेवाड़ी-फुलेरा भी 22 सितंबर को रेवाड़ी के बजाय बांदीकुई से संचालित होगी। ऐसे में रेवाड़ी से बांदीकुई के बीच इस ट्रेन की सेवा उपलब्ध नहीं होगी।

जमालपुर से नई सराय स्थित ठाकुरजी मंदिर के गेट तक बनेगी सड़क एमएलए व नप प्रधान नहीं आए इंतजार कर बुजुर्गों ने किया शुभारंभ

शहर में सेन चौक के सौंदर्यकरण व सड़क पर नगर परिषद खर्च करेगी 55 लाख, उसी के लिए लोगों को पहुंचने का किया था आग्रह

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

शहर में मोहल्ला पुरानी सराय, नई सराय व जमालपुर के बीच सैन चौक पर शुक्रवार को सड़क निर्माण के शुभारंभ को लेकर वह हो गया, जिसका सप्ताधारी नुमाइंदों को उम्मीद भी नहीं थी। सड़क के उद्घाटन के लिए विधायक ओमप्रकाश यादव और नगर परिषद चेयरपर्सन कमलेश सैनी के नहीं पहुंचने पर मोहल्लावासियों ने उनका इंतजार करने के बजाय बुजुर्गों से ही सड़क निर्माण का शुभारंभ करा दिया। यह घटनाक्रम दिनभर चर्चा का विषय बनी रही। सैन चौक के दोनों तरफ की सड़क पिछले कई वर्षों से जर्जर हालत में है। बारिश के दिनों में यहां पानी जमा होने से लोगों को परेशानी होती है। मोहल्लावासियों की मांग को देखते हुए नगर परिषद की ओर से जमालपुर से नई सराय



नारनौल। नारियल फोड़कर कार्य का शुभारंभ करते बुजुर्ग।

फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर उमराव सिंह सैनी, डा. भीम, धर्मपाल कौशिक, रघुवीर सैनी, गोविंद शर्मा एडवोकेट, सैनी अमर के पूर्व प्रधान बिशन सैनी, दिनेश शर्मा, मुकेश सैन, संजय सैनी, राजबीर जाट, अमर सिंह स्वामी, विष्णु मास्टर सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

स्थित ठाकुरजी मंदिर के गेट तक सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। करीब 55 लाख रुपये की लागत से बनने वाली इस सड़क के शुभारंभ के लिए शुक्रवार सुबह 10 बजे का समय निर्धारित किया गया था।

लोग करते रहे इंतजार, दोनों सप्ताधारी नहीं पहुंचे

कार्यक्रम में भाजपा विधायक ओमप्रकाश यादव और नगर परिषद चेयरपर्सन कमलेश सैनी को पहुंचना था। वार्ड नंबर 26 के पार्षद काशीराम सैनी की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया था। तय समय पर बड़ी संख्या में महिला-पुरुष मौके पर पहुंच गए, लेकिन करीब सवा 10 बजे तक विधायक और चेयरपर्सन नहीं पहुंचे। बताया जा रहा है कि इसी दौरान पार्षद काशीराम सैनी को विधायक के पीए का संदेश मिला कि विधायक को जरूरी काम से रेवाड़ी और गुरुग्राम जाना पड़ गया है और वे शाम करीब चार बजे पहुंच सकेंगे। विधायक के नहीं आने की सूचना के बाद चेयरपर्सन ने भी उनके साथ ही आने की बात कही। जब यह बात मोहल्लावासियों को पता चली तो लोगों ने कहा कि वे सड़क के शुभारंभ के लिए शाम चार बजे

तक इंतजार नहीं करेंगे। इसके बाद मौके पर मौजूद लोगों ने बुजुर्गों से ही सड़क निर्माण का शुभारंभ करने का फैसला लिया। इसके बाद रिटायर्ड सुबेदार चौधरी हरिराम और शिक्षा बोर्ड से सेवानिवृत्त दुलीचंद शर्मा ने सैन महाराज को तिरक लगाया और नारियल फोड़कर सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। इस दौरान लोगों ने पार्षद काशीराम सैनी के समर्थन में जयकारे भी लगाए। राजबीर ने विधायक और चेयरपर्सन के तय समय पर नहीं पहुंचने पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि जब कार्यक्रम का समय दिया गया था तो उन्हें समय पर पहुंचना चाहिए था। लोगों ने कहा कि सड़क का निर्माण शुरू होना मोहल्ले के लिए राहत की बात है, लेकिन जनप्रतिनिधियों को भी लोगों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

न्यूज डायरी



योग से आता है सकारात्मक बदलाव

नारनौल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर प्रदेश भर में चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिला कारागार में विभिन्न विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कारागार के अधीक्षक संजय बांगड ने की। कार्यक्रम के प्रात:कालीन सत्र में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जेल उप-अधीक्षक रविंद कुमार व अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा बंदियों ने सक्रिय सहभागिता की। जिला आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज पटौकरा के योग प्रशिक्षकों के सहयोग से आयोजित योग सत्र में स्वस्थ जीवनशैली, अनुशासन, सकारात्मक सोच एवं आत्म-सुधार का संदेश दिया गया। इस अवसर पर जिला कारागार के अधीक्षक संजय बांगड ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन, अनुशासन एवं सकारात्मक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि योग के नियमित अभ्यास से बंदियों को अपने जीवन एवं विचारों में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा मिलती है। सार्वकालीन सत्र में जेल परिसर में जेल अधिकारियों व कर्मचारियों ने दीप प्रज्ज्वलित किए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगलकामना के साथ देश एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की गई।

बाबा रोंझवाला मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा 24 को

मंडी अटेली। बाबा रोंझवाला मंदिर में 24 सितंबर को दिव्य मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक कुलदीप यादव एवं बाबा जाटा सेवा समिति बोवड़िया-हसनपुर के सदस्यों ने बताया कि मंदिर का जीर्णोद्धार स्वामी शिम्भूदयाल बोहरा की स्मृति में करवाया गया है। समारोह के मुख्य यजमान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हरियाणा प्रांत संघवाकल प्रताप सिंह होंगे। कार्यक्रम में महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, अधिष्ठाता हरि मंदिर संस्कृत महाविद्यालय पटौदी तथा खोजद्वाराचार्य रामरिछापालदास देवाचार्य महाराज, पीठाधीश्वर शाहपुरा सहित अनेक साधु-संतों का सक्रिय एवं आशीर्वाद रहेगा। इस समारोह में सुबह सवा नौ बजे हवन, सवा 10 बजे मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा तथा इसके बाद सवा 11 बजे भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों के साथ बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नंबरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेन्द्रगढ़।

नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरुण कंठर लेब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल

फोन : 8295738500, 9253681005

सिसोठ में 22 सितंबर को होगा बाबा जाखदेव का विशाल जागरण

महेन्द्रगढ़। गांव सिसोठ में श्रीश्री 1008 बाबा जाखदेव का विशाल जागरण 22 सितंबर तथा भंडारा व मेला 23 सितंबर को धूमधाम से आयोजित होगा। मंदिर कमेटेई के प्रधान रविंद पाल व प्रेस सचिव मुकेश चौहान ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बाबा जाखदेव का विशाल जागरण 22 सितंबर को राति 9 बजे से शुरू होगा, जो बाबा की इच्छा तक चलेगा और 23 सितंबर को प्रात: 7:15 बजे हवन होगा और सुबह 10 बजे से विशाल भंडारा व मेले का आयोजन होगा। जागरण में मुख्य अतिथि जिला प्रमुख डॉ. राकेश कुमार एवं विशिष्ट अतिथि जिला पार्षद संतोष पटौआई होंगे। जागरण में पीके न्यूजिक के साथ मा. प्रकाश कुमार एंड पार्टी के गायक कल्याण कमपाल शर्मा, मंजु, शर्मा, अजय फौजी, आरती दुग्गल, मेनू झा, छोटो बच्चा गणेश, नरेन्द्र सरघाना, योगेन्द्र और वेदप्रकाश अपने धार्मिक भजनों से हजिरी लगाएंगे। मेले में होंगी खेल प्रतियोगिता मेले में 14 वर्ष तक के बच्चों की कुश्ती और कबड्डी करवाई जाएगी। 23 सितंबर को ही वॉलीबाल शूटिंग प्रतियोगिता भी होगी। प्रवेश शुल्क 200 रुपये प्रति टीम है। प्रथम विजेता टीम को 5100 रुपये और द्वितीय विजेता को 3100 रुपये इनाम दिया जाएगा। खेलों में मैच रेफरी का फैसला सबको मान्य होगा।

उपलब्धि

■ पुरस्कार समारोह 22 को 10 बजे इंदिरा गांधी विधि मीरपुर-रेवाड़ी के कल्पना चावला भवन में होगा

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

राजकीय महाविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. पलक का चयन इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर-रेवाड़ी की ओर से सत्र 2025-26 के विश्वविद्यालय स्तरीय बेस्ट राष्ट्रीय सेवा योजना प्रोग्राम ऑफिसर में चयन किया गया है। प्राचार्य डॉ. कृष्ण कुमार व स्टाफ सदस्यों ने डॉ. पलक को इस उपलब्धि पर बधाई दी। प्राचार्य ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा

शिक्षा के साथ समाजसेवा में भी निसाल बन रहीं डॉ. पवित्रा राव

महेन्द्रगढ़। देश की 20 प्रभावशाली महिलाओं में चयनित आरपीएस ग्रुप की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव शिक्षा के साथ सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। आरपीएस ग्रुप वर्तमान में 17 विद्यालयों और 7 कॉलेजों के माध्यम से 65 हजार से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहा है। वहीं, मार्च 2024 में स्थापित श्रीमती हस्ती देवी जनकल्याणार्थ समिति के माध्यम से विभिन्न जनकल्याणकारी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। समिति की स्थापना माता बिमला देवी पत्नी रव. डॉ. ओपी यादव एडवोकेट ने समाजसेवा के उद्देश्य से की थी। समिति अध्यक्ष डॉ. पवित्रा राव के नेतृत्व में निशुल्क शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जांच, महिला सशक्तिकरण और जरूरतमंद परिवारों की सहायता जैसे कार्य किए जा रहे हैं। महेन्द्रगढ़ के मोहल्ला महाराज में संस्थाकालीन स्कूल के माध्यम से जरूरतमंद बच्चों को निशुल्क शिक्षा और कौशल विकास गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। डोहर खुर्द और मांडोला में युवाओं के लिए पुस्तकालय भी संचालित किए जा रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाए जा रहे 'पर्यावरण रखीं' कार्यक्रम के तहत अब तक 5 हजार से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं और महिलाओं को पौधों की देखरेख के लिए जोड़ा गया है। समिति से 500 से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई, बुनाई और हस्तशिल्प प्रशिक्षण केंद्रों में चलाया जा रहा है। आओ बर्न पछियों का रहस्य! अभियान के तहत पछियों के लिए सकोरे तथा पशुओं के लिए पानी के कुंड रखे गए हैं।

पीजी कॉलेज से डॉ. पलक का बेस्ट प्रोग्राम ऑफिसर पुरस्कार के लिए चयन

राष्ट्रीय सेवा योजना से विद्यार्थियों में आता है सेवा भाव

■ पुरस्कार समारोह 22 को 10 बजे इंदिरा गांधी विधि मीरपुर-रेवाड़ी के कल्पना चावला भवन में होगा

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

राजकीय महाविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. पलक का चयन इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर-रेवाड़ी की ओर से सत्र 2025-26 के विश्वविद्यालय स्तरीय बेस्ट राष्ट्रीय सेवा योजना प्रोग्राम ऑफिसर में चयन किया गया है। प्राचार्य डॉ. कृष्ण कुमार व स्टाफ सदस्यों ने डॉ. पलक को इस उपलब्धि पर बधाई दी। प्राचार्य ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा

योजना विद्यार्थियों में सेवा भावना, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यों में निरंतर सक्रिय रहते हैं। महाविद्यालय के काउंसिल मैबर व सीनियर प्रोफेसर डॉ. चंद्र मोहन ने बताया कि प्रो. डॉ. पलक ने राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को समाजसेवा, सामाजिक जागरूकता, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य जागरूकता तथा राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग



नारनौल। डॉ. पलक को बधाई देता कॉलेज स्टाफ।

लेने के लिए प्रेरित किया। जिससे पिछले पांच सालों से लगातार राष्ट्रीय सेवा योजना के राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय गतिविधियों में अहम भूमिका निभाई। इनके मार्गदर्शन में अनेक स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय और

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सानिप्री, प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सानिप्री, प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से

राष्ट्रीय लोक अदालत 12 दिसंबर को

नारनौल। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के दिशा-निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की चेयरपर्सन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. रितु वाईके बहल के मार्गदर्शन में तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी की देखरेख में 12 दिसंबर को वर्ष की चौथी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में विभिन्न लॉबिटर एवं प्री-लिटिगेशन मामलों का आपसी सहमति एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से निपटारा किया जाता है। इसमें दीवानी, वैवाहिक, बैंक ऋण, चेक बाउंस, मोटर वाहन दुर्घटना दावा सहित अन्य उपयुक्त मामलों का निपटारा किया जाएगा।



रुक्मणी और श्रीकृष्ण विवाह का मावपूर्ण वर्णन

महेन्द्रगढ़। शहर की प्राचीन संस्था श्री रामलीला परिषद के मध्य रंगमंच पर श्री गीता विज्ञान प्रचार समिति की ओर से चल रही सात दिवसीय श्रीमद्भगवत कथा के छठे दिन तपोभूमि हरिद्वार से पधार महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 स्वामी विद्यानंद सरस्वती महाराज के द्वारा रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह का मावपूर्ण वर्णन किया गया, जिसमें दर्शकों की अर्घ्य खासी भीड़ देखने को मिली। इस दौरान मास्टर अमरसिंह सोनी के निदेशन में रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह की मनमोहक झांकियां भी पेश की गईं तथा महिलाओं ने विवाह के मंगल गीत गाए और बधाईयां बांटी गईं। कार्यक्रम के यजमान रामकृष्ण शर्मा एवं ममता सापरिवार थे, जबकि प्रसाद की व्यवस्था जयप्रकाश मिश्रा की ओर से करवाई गई। पूजन का कार्य आचार्य विनोद तितोड़ी द्वारा विधित्त करवाया गया। रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह का वर्णन करते हुए गुरुजी ने बताया कि विद्वानों के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मणी श्रीकृष्ण से बहुत प्रेम करती थीं, किंतु उसका भाई रुक्मी श्रीकृष्ण से ईर्ष्या करता था। इसलिए उसने अपनी बहन का रिश्ता कृष्ण के शत्रु राजा शिशुपाल से तय कर दिया। रुक्मणी को जब इस बात का पता लगा तो उसने श्रीकृष्ण के पास पत्र भेजकर विवाह से पहले देवी पूजन के समय मंदिर से ही हजरण करके साथ ले जाने की प्रार्थना की। संदेश पाकर श्रीकृष्ण अपना रथ लेकर वहां पहुंचे और रुक्मिणी का हठण करके झरका ले गए और वहां पर विधिवत दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। इस दौरान श्री गीता विज्ञान प्रचार समिति के सभी सदस्यों के साथ-साथ श्री राम प्रचार मंडल एवं श्री श्याम सेनक मंडल के सभी सदस्यों व पदाधिकारियों ने व्यासपीठ पर गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

राष्ट्रीय लोक अदालत 12 दिसंबर को

नारनौल। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के दिशा-निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की चेयरपर्सन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. रितु वाईके बहल के मार्गदर्शन में तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी की देखरेख में 12 दिसंबर को वर्ष की चौथी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में विभिन्न लॉबिटर एवं प्री-लिटिगेशन मामलों का आपसी सहमति एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से निपटारा किया जाता है। इसमें दीवानी, वैवाहिक, बैंक ऋण, चेक बाउंस, मोटर वाहन दुर्घटना दावा सहित अन्य उपयुक्त मामलों का निपटारा किया जाएगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सानिप्री, प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सानिप्री, प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सानिप्री, प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से

नारनौल 11:40 बजे पहुंचेगी ट्रेन

रेवाड़ी से चलने वाली 09717 स्पेशल ट्रेन सुबह 11:08 बजे कुंड पहुंचेगी और 11:10 बजे रवाना होगी। इसके बाद 11:23 बजे अटेली पहुंचकर 11:25 बजे रवाना होगी। ट्रेन सुबह 11:40 बजे नारनौल पहुंचेगी और दो मिन्ट के ठहराव के बाद 11:42 बजे आगे रवाना होगी। निजामपुर में 11:55 से 11:57 बजे, डाबला में 12:08 से 12:10 बजे, मांवडा में 12:24 से 12:26 बजे तथा नीमकाथाना में 12:36 से 12:38 बजे तक ठहराव रहेगा। इसके बाद ट्रेन कांवट, श्रीमाधोपुर होते हुए दोपहर दो बजे रींगस पहुंचेगी। वापसी में 09718 स्पेशल ट्रेन रींगस से दोपहर 2:55 बजे रवाना होगी। यह श्रीमाधोपुर में 3:05 बजे, कांवट में 3:21 बजे, नीमकाथाना में 3:39 बजे, मांवडा में 3:51 बजे, डाबला में 4:07 बजे, निजामपुर में 4:20 बजे, नारनौल में 4:40 बजे, अटेली में 4:55 बजे तथा कुंड में 5:10 बजे पहुंचेगी। इसके बाद ट्रेन शाम 6:40 बजे रेवाड़ी पहुंचेगी।

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत बच्ची के दिल के छेद की सफल सर्जरी

हरिभूमि न्यूज़ ►► सतनाली मंडी

आरबीएसके (राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम) टीम सतनाली की ओर से स्कूल स्क्रीनिंग के दौरान जन्मजात हृदय रोग (दिल में छेद) के लिए चिन्हित बच्ची का आरबीएसके योजना के तहत बच्ची का सफल हृदय ऑपरेशन करवाया। यह जानकारी देते हुए जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र टीम ईंचार्ज सतनाली डॉ. गौतम यादव ने बताया कि जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र कार्यक्रम के तहत 0 से 18 वर्ष तक के सभी बच्चों की 4डी सहित 32 प्रकार की बीमारियों की मुफ्त जांच व इलाज किया जाता है। उन्होंने बताया कि स्कूल स्क्रीनिंग के दौरान खंड सतनाली के गांव श्यामपुरा निवासी अनिल कुमार की बेटी कियारा (सात वर्ष) जन्मजात हृदय रोग (दिल में छेद) के लिए चिन्हित की गई। इस पहचान में आरबीएसके टीम के फार्मासिस्ट सुनील कुमार एवं एनएएमअनीता का विशेष योगदान रहा। टीम ने तुरंत बच्ची की प्रारंभिक जांच कर उसे जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र नारनौल में रेफर किया। जहां मैनेजर डॉ. दीपक कौशिक एवं आरबीएसके कॉर्डिनेटर मीरा यादव के सहयोग से विस्तृत जांच के बाद बच्ची को उच्च स्तरीय उपचार के लिए निजी हॉस्पिटल गुरुग्राम रेफर किया गया। जिसमें आरबीएसके योजना के तहत बच्ची का सफल



सतनाली मंडी। बच्ची कियारा के साथ डॉ. गौतम यादव।

हृदय ऑपरेशन बिल्कुल नि:शुल्क किया गया। वर्तमान में बच्ची पूर्ण रूप से स्वस्थ है और अपने घर पर है। बच्ची के परिवार ने हरियाणा सरकार, आरबीएसके टीम सतनाली, जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र नारनौल एवं स्वास्थ्य विभाग का आभार व्यक्त किया है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सतनाली के एसएमओ डॉ. मनीष यादव ने बताया कि जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र टीम सतनाली ने पहले भी कई बच्चों के ऑपरेशन नि:शुल्क करवाए हैं और टीम के सभी सदस्यों के प्रयास सराहनीय हैं।

सैनीपुरा में रामलीला मंचन की तैयारियां तेज

महेन्द्रगढ़। श्री हनुमान रामलीला सैनीपुरा में इस बार भी रामलीला मंचन की तैयारियां जोर पकड़ चुकी हैं। मंच पर भूषु श्रीराम की मर्यादा, लक्ष्मण, भरत की क्षात्रभक्ति, हनुमान की भक्ति और रावण के अहंकार को जीवंत करने के लिए स्थानीय कलाकार दिन-रात अभ्यास में जुटे हैं। संवादों की लय, भाव-वाणी के उतार-चढ़ाव और पात्रों की मंचीय प्रस्तुति की विशेष रूप से तैयारी जा रहा है। कमेटेई डायरेक्टर डॉ. मोनू सैन के कुशल निदेशन में कलाकारों को रामलीला की मंचन पद्धति के अनुरूप संवाद अदरगों पात्रों की प्रस्तुति का गहन अभ्यास कराया जा रहा है। लंबे समय से सतनाली मंचन से जुड़े डॉ. सैन प्रत्येक पात्र की भूमिका की बारीकियों पर स्वयं नजर रख रहे हैं। कलाकारों को संवाद केवल बोलने नहीं, बल्कि पात्र के प्रयोग के अनुरूप अभ्यास कराया जा रहा है। वहीं संगीत निदेशक सुनील पात्रों की गायन के गुर सिखा रहे हैं। बता दें कि महेन्द्रगढ़ शहर में तीन प्रमुख रामलीला मंचित होती हैं और तीनों की अपनी अलग विशेष पहचान है। इसी क्रम में सैनीपुरा की श्री हनुमान रामलीला भी

अपनी प्रस्तुति को लेकर तैयारियों में जुटी है। संवाद और अभिनय के सामंजस्य के साथ धार्मिक प्रसंगों को प्रभावी बनाने की कवायद चल रही है। कमेटेई के प्रधान राजेश सैनी ने व संरक्षक जितेंद्र चौधरी ने बताया कि स्थानीय कलाकार पूरे उत्साह और समर्पण के साथ अभ्यास कर रहे हैं। मंच की भव्यता और आधुनिक लाइट्स से मंच को एक थियेटर का रूप दिया जा रहा है मंचन के दौरान दरबार, वनवास और रामभूमि के दृश्यों को और अधिक जीवंत एवं प्रभावशाली बनाने के लिए कलाकार विशेष युद्धभूमास में जुटे हैं। फिक्ली अंदाज के सधे हुए एक्शन और साहसदार मंच सज्जा के माध्यम से हर दृश्य को दर्शकों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करने की तैयारी की जा रही है। पिछले वर्ष की प्रस्तुति से मिले अनुभवों की आधार बनाकर इस बार मंचन की और प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। रिहर्सल के दौरान हजारीलाल सैनी, सुरेंद्र सैनी, कमल सैनी, बालकिशन पाथरोली वाले, भूप सोनी, जयसिंह सैनी, संजय बाबूदिया, शेरसिंह, रामोतार, मनीष, प्रथम व पुनीत स्मैत कई कलाकार मौजूद रहे।

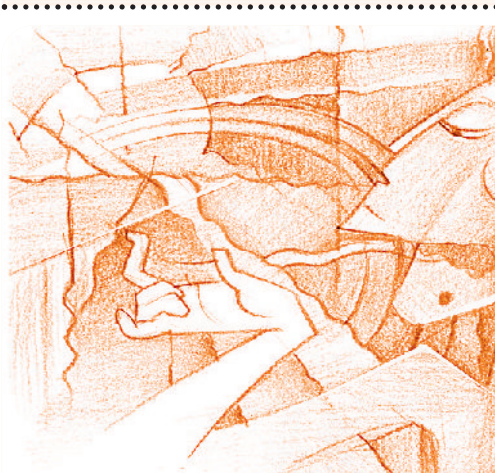


कवर स्टोरी / अंशु सिंह

हाल के वर्षों में हमारे यात्रा करने के तरीके में एक अलग तरह का बदलाव आ रहा है। तेजी से घूमने-फिरने और व्यस्त शेड्यूल के बजाय अब लोग घुमकड़ी के दौरान आराम, शांति और सुकून भरे पलों की तलाश कर रहे हैं। इसे स्लीपकेशन या स्लीप टूरिज्म कहा जा रहा है। यानी एक ऐसी सोच-समझकर की गई धीमी गति वाली यात्रा, जो भाग-दौड़ के बजाय आराम को प्राथमिकता देती है।

सोने के लिए जा रहे घूमने

पेशे से चिकित्सक मेघना सेठ की दिनचर्या कुछ ऐसी रहती थी कि उन्हें नींद पूरी करने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती थी। नींद की इस कमी का असर कहीं न कहीं उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा था। उनके व्यवहार में हल्का चिड़चिड़ापन भी आ गया था, जो उनके पेशे के लिए सही नहीं था। उनके कुछ दोस्तों ने उन्हें कहीं घूमने जाने की सलाह दी और मेघना निकल पड़ीं, दोस्तों के साथ चार दिन के वीकेंड ट्रिप पर। लेकिन पहले दिन के गुजरते ही उन्होंने सबको साफ-साफ कह दिया कि वे अब और कहीं घूमेंगी नहीं, बल्कि कमरे में आराम करेंगी और अपनी नींद पूरी करेंगी। दोस्तों को पहले पहल उनका साथ घूमने से इंकार करना अच्छा नहीं लगा। कुछ देर तक सबने मौन साध लिया। लेकिन फिर मेघना ने उन्हें राजी कर लिया और इस तरह अगले दो दिन वे रिजॉर्ट में ही रहीं। गुरुग्राम के एक एमएनएस में सीनियर एनालिस्ट अमित मिश्रा भी जब कभी फैमिली ट्रिप पर जाते हैं, तो ये सुनिश्चित करते हैं कि वहां उन्हें अपनी नींद पूरी करने का पूरा मौका मिले। इसलिए वे ज्यादा भाग-दौड़ या आस-पास के इलाकों को एक्सप्लोर करने के बजाय रिजॉर्ट में रहकर ही छुट्टियां मनाने को प्राथमिकता देते हैं।



गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

याद नहीं करता कोई भी

याद नहीं करता कोई भी वक्त निकल जाने के बाद
लथ छोड़ देते हैं अक्सर लोग संभल जाने के बाद

इस जग का दस्तूर यही है सब साथी हैं त्रियायरे के
घुस जाते हैं लोग घरों में सूरज ढल जाने के बाद

रूप-रंग, कौमार्य उसे नित बांधे रखता है गुलशन से
पास नहीं जाता फिर भौंरा गुल के फल जाने के बाद

इश्क हुआ तो बेफिक्री में कुछ भी संभव हो जाता है
ढल जाता है हर सांघे में लोह पिघल जाने के बाद

दिल से जो भी निकलेगा वो लौट नहीं पाएगा फिर से
जैसे लौट नहीं पाता है बीता कल जाने के बाद

केवल आप प्रतीक्षा करिए दिन के ढल जाने का 'नवरंग'
परवानों की भीड़ लगेगी शम्भा जल जाने के बाद

स्लीपकेशन घुमकड़ी के साथ मिलेगी भरपूर आराम वाली नींद

आज की भाग-दौड़ मरी जीवनशैली में अधिकतर लोगों को सुकून और चैन मरी नींद की कमी अक्सर महसूस होती है। इस कमी को पूरा करने में स्लीपकेशन का ट्रेंड बहुत कारगर साबित होता है। जहां घूमने के साथ ही भरपूर आराम का भी मौका मिलता है। स्लीपकेशन क्या है, इसका ट्रेंड क्यों बढ़ रहा है, आप भी जानना चाहेंगे।

क्या है स्लीपकेशन

स्लीपकेशन, यात्रा का एक ऐसा रूप है जहां आपका ध्यान आपके आस-पास की हर चीज की खोज से हटकर, खुद से दोबारा जुड़ने पर केंद्रित हो जाता है। कोई जल्दबाजी वाली सुबह नहीं। हर सेकेंड का 'अधिकतम उपयोग' करने का कोई दबाव नहीं। इसके बजाय आप निर्बाध नींद के बाद धीमी, सचेतन सुबह का आनंद ले सकते हैं। एक ऐसा समय बिता सकते हैं, जिसका कोई हिसाब नहीं होता है। वैश्विक स्तर पर इस विचार को लोकप्रियता मिल रही है, क्योंकि लोगों ने यह पहचानना शुरू कर दिया है कि शहरों की आधुनिक जीवनशैली हमें लगातार अतिउत्तेजित और चुपचाप थका देती है। वैसे में एक स्लीपकेशन बिना किसी अपराध बोध के आराम करने की अनुमति देता है। हालांकि भारत में 'स्लीपकेशन' का कॉन्सेप्ट अभी काफी नया है। लेकिन यह धीरे-धीरे सोच-समझकर की जाने वाली यात्राओं का हिस्सा बनता जा रहा है।

नींद की कमी से परेशान हैं लोग

आज के दौर में बेशुमार काम, जिम्मेदारियों, रिश्तों को संभालना और रोजमर्रा की जिंदगी के लगातार मानसिक बोझ के बीच तालमेल बिठाना जरूरी हो गया है। इस बारे में वरिष्ठ मनोचिकित्सक गगनदीप कौर कहती हैं, 'दुनिया में नींद की कमी वाले देशों में जापान के बाद भारत दूसरे नंबर पर है। देश में नींद की कमी की समस्या पहले से ही मौजूद डायबिटीज, मोटापा,

अनोखा होता है स्लीपकेशन का अनुभव

- ▶ इसमें व्यक्ति को सुबह बिना आलार्म के जागना होता है।
- ▶ बादलों को घुमड़ते हुए देखने के साथ कोई गर्म पेय पीना।
- ▶ अपने विचारों को लिखना या पूरी तरह से शांति में बैठना।
- ▶ बिना किसी मंजिल के लंबी सैर पर थू ही घूमने निकल जाना।
- ▶ इसमें कोई तय कार्यक्रम नहीं होता। हर पल को रिकॉर्ड करने का कोई दबाव नहीं होता।
- ▶ स्लीपकेशन के दौरान धीरे-धीरे कुछ बदलाव महसूस होते हैं।
- ▶ मेडिटेशन से मन शांत होने लगता है।
- ▶ शरीर आराम महसूस करने लगता है।

इसलिए बढ़ रहा स्लीपकेशन का ट्रेंड

यूपएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन जैसे बड़े हेल्थ ग्रुप्स के दिशा-निर्देशों की मानें, तो ज्यादातर स्वस्थ वयस्कों को बेहतर ढंग से काम करने के लिए हर रात 7 से 9 घंटे की नींद की जरूरत होती है। लेकिन 'लोकल सर्कलस' का एक सर्वे बताता है कि आज लगभग 10 में से 6 भारतीय वयस्कों को छह घंटे से भी कम की बिना रुकावट वाली नींद मिलती है। करीब 50 फीसदी से अधिक काम-काजी लोग नींद की कमी से जूझ रहे हैं। इससे दिमाग पर बोझ बढ़ रहा है और वे

थका हुआ महसूस करते हैं। इस 'स्लीप डेब्ट' को दूर करने के लिए ही स्लीपकेशन पर जाने का चलन बढ़ रहा है।

टूरिज्म सेक्टर का नया बाजार

आज कई बड़े टूरिज्म कॉर्पोरेट्स ने इस नए बाजार को देखते हुए ऋषिकेश, कुर्ग, केरल, धर्मशाला और उदयपुर के कई प्रीमियम वेलनेस रिजॉर्ट्स में इस उभरते सेक्टर के लिए तैयारी करनी शुरू कर दी है। इन रिजॉर्ट्स के कमरों में टीवी या डिजिटल गैजेट्स की मनाही होती है। कमरों में पूरी तरह सन्नाटा और अंधेरा बनाए रखने के लिए विशेष पर्दों का इस्तेमाल किया जाता है। सोने से पहले लेवेंडर एरोमा थैरेपी और विशेष मेलेटोनिन रिच डाइट या हर्बल टी दी जाती है, जो गहरी नींद लाने में मदद करती है। उत्तराखंड के मारचुला में एक रिजॉर्ट के संचालक करण कहते हैं, 'आजकल की शहरी जिंदगी से हर कोई बाकिफ है। देर रात तक लैपटॉप पर काम करना, टीवी या मोबाइल देखना, एक ऐसी आदत बन गई है कि उससे छुटकारा नहीं मिल पा रहा। डेडलाइंस को पूरा करने के लिए पेशेवर लोग आधी-आधी रात तक स्क्रीन से चिपके होते हैं। इसका सेहत पर असर पड़ता है। इसलिए स्लीपकेशन के दौरान उनके सुकून का विशेष ध्यान रखा जाता है। कोई डिस्टर्ब न करे ताकि वे साथ आए दोस्तों अथवा परिजनों से बात करें। सुबह के समय उनके लिए योग एवं ध्यान और शाम को संगीत का सेशन रखा जाता है, जिससे कि उनका दिमाग शांत रहे और वे अच्छी नींद ले सकें। *

कार्य प्रगति पर है !

शहर के लोग सड़क पर फैले कीचड़ की फिसलन से हलकान हो रहे हैं और उधर, नेता, अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदार स्वीकृत राशि पर अपनी-अपनी पकड़ बनाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यही कारण है कि जो कार्य तीन महीनों में पूर्ण होना था, वो एक साल तीन महीने के बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है।

घर के पुरुषों को भी बरामदे, कमरों और पोर्च की साफ-सफाई के लिए आदेश देती रहती हैं। इससे बचने के लिए काम-काजी पुरुष वर्ग, बहाने बनाकर अपने कार्यस्थल पर सुबह जल्दी जाते और शाम को विलंब से घर लौटते हैं।

सड़क के किनारे मौजूद गटर और नालियां भी लंबे समय से अपने जीर्णोद्धार के लिए खुली हुई हैं, जिससे जमा गंदे पानी में मच्छरों के झुंड बिना रोक-टोक के



यायावरी करते रहते हैं। उनकी सक्रियता से सरकारी और निजी अस्पताओं में मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया के मरीजों की लाइन दिन-प्रतिदिन लंबी होती जा रही है। कुछ जागरूक नागरिकों ने अपने घर के सामने मौजूद जलयुक्त कुंड को पार करने के लिए पट्टिए के अस्थाई पुल का निर्माण कर रखा है। लेकिन सावधानी हटते ही उस पर भी दुर्घटना घटित हो जाती है। मुख्य सड़क से लगे मकान के रहवासी बेचारे जी,

कल संध्या काल में अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटी सहित वहीं गटरदोज हो गए। न केवल उनके धवल वस्त्र गंदगी से अलंकृत हुए, उनकी स्कूटी में भी हलचल बंद हो गई। जुगत बाबू की धर्मपत्नी के साथ भी वहीं हादसा हो गया। वे सब्जी मंडी से थैला भरकर ताजी तरकारी लेकर आ रही थीं। छत पर खड़ी पड़ोसन से बात करने में मगन, उन्हें नाली का ध्यान नहीं रहा और वे सब्जी सहित नाली में समा गईं। आस-पास के लोगों ने

लघुकथा / कृति आर.के. जैन

पिता का तकिया



कभी नहीं पढ़ा। उसने तर्किए को सीने से लगा लिया। उस दिन वह पहली बार फूट-फूटकर रोया, क्योंकि दुनिया का सबसे महंगा तकिया वही होता है, जिसमें रुई नहीं, अधूरी प्रतीक्षाएं भरी हों। रिश्ते अभाव से नहीं, उपेक्षा और प्रतीक्षा से दम तोड़ते हैं। *



ऑनलाइन शॉपिंग का बढ़ता ट्रेंड ऑफर-रिटर्न ट्रैप से रहें सावधान

फेस्टिव सीजन के साथ ही जमकर शॉपिंग भी शुरू हो जाती है। इसी के चलते ऑनलाइन शॉपिंग में ऑफर्स और कई लालच दिए जाते हैं। इसको अच्छी तरह समझना और इसके जाल में फंसने से बचने के लिए सावधानी जरूरी है।

लाइफस्टाइल / विवेक कुमार

कभी बाजार जाने के लिए समय निकालना पड़ता था, दुकान-दुकान घूमना पड़ता था, फिर भी मनपसंद चीज मिलेगी या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती थी। अब वही खरीदारी मोबाइल स्क्रीन पर कुछ मिनटों में ही हो जाती है। कपड़ों से लेकर कॉस्मेटिक, किचन का सामान, जूते, बैग, बच्चों की चीजें और रोजमर्रा का राशन तक घर बैठे मंगाया जा सकता है। इससे महिलाओं को बहुत सुविधा हुई है। लेकिन इस सुविधा में नई तरह की चुनौतियां और फंसाने वाले जाल भी मौजूद होते हैं।

ऑफर के लालच से बचें: ऑनलाइन बाजार में ग्राहक को आकर्षित करने के लिए लगातार सेल, कूपन, फ्लेश डील, आज आखिरी मौका, सिर्फ दो पीस बाकी, मुफ्त डिलिवरी जैसे संदेश बार-बार इस तरह दोहराए जाते हैं कि आपके दिमाग में बैठ जाएं। ऐसे में कई बार हमें जरूरत नहीं होती, फिर भी हम ढेर सारी चीजें खरीद लेते हैं। क्योंकि ऑनलाइन खरीदारी में एक भ्रम यह बना दिया गया है कि यहां सब कुछ बहुत सस्ता मिल रहा है। ऐसे में लोग सोचते हैं, जब 40 फीसदी तक सस्ता है, तो खरीद ही लेना चाहिए। लेकिन जब हमें किसी चीज की जरूरत न हो, तो उसकी खरीदारी बचत नहीं बल्कि एक तरह का खर्च होता है। इसलिए किसी भी डील को देखकर सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए, अगर इस पर छूट नहीं होती, तो क्या मैं इसे खरीदता? अगर जवाब नहीं है, तो इसका मतलब है खरीदारी की जरूरत नहीं थी, बस विज्ञापन के प्रभाव में आकर खरीद लिया। एक बात और याद रखें ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ा आकर्षण तस्वीरों का होता है। शानदार रोशनी में खींची गई मॉडल की तस्वीर देखकर कोई ड्रेस बेहद खूबसूरत लग सकती है। लेकिन वास्तविक उत्पाद का रंग, कपड़े की गुणवत्ता या फिट का आकार जरूरी नहीं कि अच्छा ही हो। इसलिए केवल तस्वीर

पर भरोसा करना सही नहीं है। उत्पाद का विवरण पढ़ना भी बहुत जरूरी है।

जरूर पढ़ लें रिव्यू: जब ऑनलाइन खरीदारी करें, तो सबसे कारगर होते हैं पहले के खरीदारों के खरीद संबंधी रिव्यू। इसलिए जब भी ऑनलाइन कोई चीज खरीदें, तो उसके पहले ऑनलाइन रिव्यू जरूर पढ़ें। हालांकि यहां भी हर खरीदार की उसकी अपनी समीक्षा को बिल्कुल सत्य न मान लें। बेहतर है कि कई खरीदारों की प्रतिक्रियाएं पढ़ें, खासकर उन टिप्पणियों को विशेष रूप से देखें, जिनमें उत्पाद की कमियां विस्तार से बताई गई हों।

रेंटिंग स्टार्स से रहें सावधान: जहां तक रेंटिंग की बात है तो रेंटिंग के स्टार देखकर अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचें बल्कि लिखी हुई टिप्पणी का मतलब ज्यादा सच होता है। पांच सितारे देखकर तुरंत प्रभावित होने की बजाय, यह देखना ज्यादा उपयोगी होता है कि ग्राहक ने वास्तव में लिखा क्या है? कई बार हजारों लोगों की अच्छी रेंटिंग के बावजूद आपकी जरूरत के लिए उत्पाद अनुपयुक्त हो सकता है।

जान लें रिटर्न पॉलिसी: ऑनलाइन खरीदारी में एक भ्रम यह बना दिया गया है कि यहां सब कुछ बहुत सस्ता मिल रहा है। ऐसे में लोग सोचते हैं, जब 40 फीसदी तक सस्ता है, तो खरीद ही लेना चाहिए। लेकिन जब हमें किसी चीज की जरूरत न हो, तो उसकी खरीदारी बचत नहीं बल्कि एक तरह का खर्च होता है। इसलिए किसी भी डील को देखकर सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए, अगर इस पर छूट नहीं होती, तो क्या मैं इसे खरीदता? अगर जवाब नहीं है, तो इसका मतलब है खरीदारी की जरूरत नहीं थी, बस विज्ञापन के प्रभाव में आकर खरीद लिया। एक बात और याद रखें ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ा आकर्षण तस्वीरों का होता है। शानदार रोशनी में खींची गई मॉडल की तस्वीर देखकर कोई ड्रेस बेहद खूबसूरत लग सकती है। लेकिन वास्तविक उत्पाद का रंग, कपड़े की गुणवत्ता या फिट का आकार जरूरी नहीं कि अच्छा ही हो। इसलिए केवल तस्वीर

सही प्लेटफॉर्म चुनें: सस्ती कीमत देखकर किसी अनजान वेबसाइट पर तुरंत भुगतान करना जोखिमभरा हो सकता है। वेबसाइट का नाम, संपर्क, जानकारी, रिटर्न नीति और भुगतान का विकल्प देखकर ही खरीदारी करनी चाहिए। *

किसी तरह अपनी हंसी पर नियंत्रण कर उन्हें बाहर निकाला। वे रुआंसी होकर कीचड़ से सने हुए कपड़े धारण किए घर में प्रविष्ट हुईं। अभी दो दिन पहले ही एक नवयुवक बाइक सवार मोबाइल पर अपनी प्रेयसी से बात करने में इतना मशगूल हुआ कि अपनी स्टायलिश बाइक समेत नालीदर्शन को प्रवेश कर गया। बमुश्किल लोगों ने उसको बाहर निकाला। इस तरह की तमाम घटनाएं लगातार होती रहती हैं। कार्य में प्रगति भले न के बराबर हो लेकिन आते-जाते लोगों को 'कार्य प्रगति पर है' का बोर्ड जरूर दिखाई पड़ता है।

सड़क निर्माण में विलंब को पक्ष और विपक्ष के नेता आपदा में अवसर के रूप में देखते हैं। वे नेता जो चार साल पहले चुनावी रण में धूल काट चुके थे, वे एक लंबे अंतराल के बाद अपने पंख फड़फड़ा कर मुद्दा लपकने की चेष्टा में जुट जाते हैं, ताकि उनकी राजनीतिक बेरोजगारी दूर हो सके। वहीं सत्तासीन नेता यह प्रयास करते हैं कि सड़क निर्माण कार्य चुनाव के ठीक पहले ही पूर्ण हो, ताकि उनके अपने क्षेत्र में विकास कार्यों की फेहरिस्त में इसे जोड़ा जा सके और जाते जाते के जरिए को और मजबूत किया जा सके। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

कविता के आकाश में स्त्री चेतना के स्वर

कवियत्री आरती आस्था का पांचवां कविता संग्रह 'छत पर लड़कियाँ' कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुआ है। इन कविताओं की रेंज बहुत बड़ी ही नहीं बहुस्तरीय भी है। यहां सदियों से पितृसत्तात्मक सोच वाले समाज में पली-बढ़ी स्त्री को दारुण व्यथा के साथ ही स्त्री चेतना का वह स्वर भी गुंजता है, जो हर अनुचित प्रतिबंध को अस्वीकारता है। 'छत पर खड़ी लड़कियाँ/देखते हुए डूबते



कभी नहीं है डूबना/यह प्रक्रिया भर है/दोबारा से उगने की।' जैसी पंक्तियां यह साबित करती हैं कि स्वतंत्रचेता स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार मानने के बजाय नई उड़ान भरने को तत्पर रहती है। 'बिंदी और सिंदूर' कविता एक ऐसा बिंब उकेरती है, जो पारंपरिक प्रतीकों को भी नए संदर्भ में परिभाषित करती है। यहां स्पष्ट होता है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को स्वीकारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है। स्त्री की सोच में आए क्रांतिकारी

बदलाव को संग्रह की कई अन्य कविताओं में स्पष्ट तौर पर लक्षित कर सकते हैं। 'मी लॉर्ड! मुझे 'चाय दीजिए' कविता में वह कहती हैं, 'मैंने कल कर दिया/मी लॉर्ड/उस लड़की का/परंपराओं, संस्कारों के हवन कुंड में/होम किए दे रही थी जो/खुद को/रखने को झूठा मान/घर परिवार का।' 'सुनो नादिया' जैसी कविता को शामिल करने से इस संग्रह की कविताओं का कैमवास और भी विस्तारित सूरज को/सीखती हैं, डूबना नहीं है डूबना/यह प्रक्रिया भर है/दोबारा से उगने की।' जैसी पंक्तियां यह साबित करती हैं कि स्वतंत्रचेता स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार मानने के बजाय नई उड़ान भरने को तत्पर रहती है। 'बिंदी और सिंदूर' कविता एक ऐसा बिंब उकेरती है, जो पारंपरिक प्रतीकों को भी नए संदर्भ में परिभाषित करती है। यहां स्पष्ट होता है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को स्वीकारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है। स्त्री की सोच में आए क्रांतिकारी

पुस्तक: छत पर लड़कियाँ (कविता संग्रह), लेखिका: आरती आस्था, मूल्य: 299 रुपये, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली



गणपति बप्पा का भव्य विसर्जन आस्था-सामूहिकता का उत्सव

पर्व-संस्कृति
धीरेज बसाक

विघ्न विनाशक गणपति की विदाई का दृश्य अपने आपमें भारतीय संस्कृति का एक अनूठा दृश्य होता है। सिर पर पगड़ी बांधे बुजुर्ग, जयघोष करते युवा और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी महिलाएं, कंधों पर गणपति की प्रतिमा उठाए भक्तगण और ढोल की थाप पर थिरकते अलग-अलग उम्र के लोग-सब एक ही स्वर में पुकारते हैं, ‘गणपति बप्पा मोरया!’ कुछ घंटे पहले तक जो प्रतिमा किसी घर, गली या मुहल्ले के एक मंडप की केंद्र बिंदु थी, विसर्जन के समय वह हजारों लोगों की साझी आस्था और भावनाओं का केंद्र बन जाती है। यही गणेश विसर्जन की सबसे बड़ी सांस्कृतिक विशेषता है। यही भव्य दृश्य आगामी (25 सितंबर) अनंत चतुर्दशी को फिर देखने को मिलेगा।

सामूहिकता-साझेदारी का उत्सव

गणेशोत्सव की खूबसूरती केवल प्रतिमा की स्थापना और पूजा में नहीं बल्कि उसके आस-पास निर्मित होने वाली सामुदायिक दुनिया में भी है। मुहल्ले में मंडप लगाना, मिलकर सजावट करना, सामूहिक रूप से प्रसाद तैयार करना और फिर मिलकर आरती में शामिल होना, वास्तव में गणेश स्थापना से लेकर गणेश विसर्जन तक एक लंबा सांस्कृतिक उल्लास लोगों के बीच छाया रहता है। यह उल्लास विसर्जन के समय चरम पर पहुंचकर भावुक विदाई में बदल जाता है। अगर गणेश विसर्जन को ध्यान से देखें तो लगता ही नहीं कि यह किसी मूर्ति का विसर्जन है। ऐसे लगता है जैसे अपने किसी अत्यंत प्रिय से हम बिछड़ रहे हों। गणेश-प्रतिमा विसर्जन के समय सामूहिकता का सौंदर्य देखने लायक होता है। कोई प्रतिमा उठता है, कोई रास्ता साफ करता है, कोई पानी बांटता है, कोई ढोल बजाता है, कोई फूल बरसाता है, कोई पीछे चल रहे बच्चों का ध्यान रखता है, यह समूचा उल्लास सामूहिकता और साझेदारी का उत्सव होता है।



मिट जाते हैं सभी भेदभाव

गणेश विसर्जन भारतीय समाज की उस पुरानी परंपरा को जीवित करता है, जिसमें उत्सव केवल देखने की चीज नहीं है, मिलकर जीने का आयोजन होता है। सामान्य दिनों में भले भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जाति, वर्ग, पेशा और आर्थिक स्थिति की अनेक दूरियां दिखाई पड़ती हों, लेकिन गणपति पूजा में यह कहीं नहीं दिखती।

किसी हाथ में आरती की थाली होती है, तो कोई रस्सी पकड़कर प्रतिमा के साथ चल रहा होता है, कोई ढोल बजा रहा

होता है और कोई नृत्य कर रहा होता है। यहां व्यक्ति की सामाजिक पहचान से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी साझी भागीदारी बन जाती है। यही वजह है कि गणेशोत्सव सिर्फ पूजा का पर्व नहीं बल्कि सामाजिक मेल-जोल का सार्वजनिक उत्सव होता है।

पीढ़ियों को जोड़ता उत्सव

गणेश विसर्जन सांस्कृतिक उत्सव कई पीढ़ियों को एक साथ जोड़ देता है। बुजुर्गों के पास परंपरा की स्मृतियां होती हैं, युवाओं के पास ऊर्जा और आयोजन की जिम्मेदारी संभालने का भाव होता है। बच्चे पूरे उत्सव में उत्सुकता और विस्मय के साथ भागीदार रहते हैं। एक बुजुर्ग जब बच्चे को समझाता है कि गणपति की स्थापना क्यों की जाती है और विसर्जन का अर्थ क्या है, तो यह सिर्फ एक धार्मिक जानकारी नहीं होती। यह उस

विशेष: अनंत चतुर्दशी, 25 सितंबर

अनंत चतुर्दशी के अवसर पर सैकड़ों ढोल की थाप, सामूहिक जयघोष और भक्तों की नम आंखों के बीच गणपति बप्पा की विदाई केवल एक प्रतिमा का विसर्जन नहीं, बल्कि सामूहिक आस्था और अपनत्व का उत्सव भी होता है। हजारों हाथ जब बप्पा को विदा करते हैं, तो हर कदम में परंपरा, साझेदारी और अगले बरस लौटने की उम्मीद साथ चलती है।

सांस्कृतिक स्मृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का जरिया होती है, जो ऐसी ही परंपराओं से मिलती है। इस तरह हर साल होने वाला विसर्जन परंपरा की पुनरावृत्ति के साथ-साथ उसके हस्तांतरण का भी अवसर बन जाती है।

विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास

गणपति विसर्जन का सबसे भावुक क्षण वह होता है, जब भक्त गणपति की प्रतिमा को विदा करते हैं, लेकिन इस विदाई में स्थाई वियोग का भाव नहीं होता। क्योंकि विदाई के दौरान जो जयकारा लगता है, उसमें विदाई के साथ-साथ वापसी का निवेदन कहीं ज्यादा मुखर होता है, ‘गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ।’ यह जयघोष भारतीय संस्कृति के एक गहरे जीवनदर्शन को व्यक्त करता है। यहां विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास मौजूद होता है। इसलिए विसर्जन का दुःख अगले आगमन की प्रतीक्षा के एहसास में कम हो जाता है। मिट्टी की प्रतिमा का पानी में विलीन होना भी इसी भाव को विस्तार देता है, जिस मिट्टी से आकृति बनी, वह फिर प्रकृति में लौट जाती है। प्रतीकात्मक रूप में यह प्रक्रिया यह बताती है कि रूप बदलता है, लेकिन संबंध और स्मृति बने रहते हैं।

गढ़ते हैं जीवंत लोक-संस्कृति

गणेश विसर्जन केवल धार्मिक जुलूस नहीं होता। ढोल-ताशे, लोकगीत, नृत्य, पारंपरिक वाद्य और सामूहिक जयघोष यह सब मिलकर एक जीवंत लोक-संस्कृति गढ़ते हैं। महाराष्ट्र में विशेषकर ढोल, ताशा तथा विसर्जन यात्रा का हिस्सा होते हैं। उनकी यह सामूहिक लय केवल संगीत नहीं पैदा करती बल्कि साथ चल रही भीड़ को भी एक रिश्ता, एक साझी ताल देती है। हजारों कदम जब एक ही ताल पर उठते हैं और एक ही ताल पर जमीन में गिरते हैं, तो व्यक्ति भीड़ का एक हिस्सा भर नहीं रहता बल्कि सामूहिक अनुभव का सहभागी बन जाता है। गणेश विसर्जन में यही सांस्कृतिक अनुभव हर कोई महसूस करता है।

साझी भावनाओं का सांस्कृतिक प्रदर्शन

गणेश प्रतिमा भले किसी एक परिवार ने स्थापित की हो या किसी सार्वजनिक मंडल ने, पर उसकी विदाई सामूहिक होती है। विसर्जन यात्रा जहां-जहां से गुजरती है, वहां-वहां के लोग इसका हिस्सा हो जाते हैं, फिर भले चाहे वो कुछ कदम चलकर इससे अलग हो जाएं। विसर्जन जुलूस जहां से गुजरता है, वह अजनबी भीड़ के रूप में नहीं गुजरता बल्कि हर जगह मौजूद लोग इसमें शामिल हो जाते हैं। इसलिए विसर्जन वास्तव में प्रतिमा को महज पानी में प्रवाहित करने की प्रक्रिया नहीं है, यह साझी आस्था, साझी जिम्मेदारी और साझी भावनाओं का सामूहिक और सांस्कृतिक प्रदर्शन है। *

डिजिटल इंपैक्ट डी. जे. नंदन

एक समय था, जब बॉलीवुड सितारों की लोकप्रियता का पैमाना सिनेमाघरों के बाहर लगी भीड़, फिल्मी पत्रिकाओं के कवर और टीवी इंटरव्यू हुआ करते थे। किसी अभिनेता की फिल्म रिलीज होती थी, तो शहरों की दीवारें उसके पोस्टर से पट जाती थीं। आज का दौर उस दौर से बिल्कुल अलग है। अब किसी भी फिल्म की सफलता का पहला संकेत टिकट खिड़की पर नहीं बल्कि इंस्टाग्राम रीलस, यू-ट्यूब शॉर्ट्स और एक्स (ट्विटर) के ट्रेंडिंग हैशटैग में दिखाई देता है। बदल गई स्टारडम की परिभाषा: बॉलीवुड में स्टारडम का गणित इस सोशल मीडिया के युग में पूरी तरह से बदल चुका है। आज किसी अभिनेता की लोकप्रियता का पैमाना, सिर्फ उसकी अभिनय क्षमता नहीं बल्कि सोशल मीडिया पर उसकी फैन फॉलोइंग मानी जाती है। आज के इस डिजिटल दौर में फैन आर्मी और सोशल मीडिया पर पैदा होने वाले बज से किसी भी स्टार का असली स्टारडम तय होता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, अब हिंदी फिल्मों की खोज और दर्शकों को सिनेमाघरों तक पहुंचाने वाले सबसे प्रभावी माध्यमों में गिने जा रहे हैं। फैन आर्मी में बदला फैन क्लब: 1990 और 2000 के दशक में फिल्म स्टार्स के फैन क्लब हुआ करते थे। वे पोस्टर लगाते थे, अपने पसंदीदा एक्टर का जन्मदिन मनाते थे और कभी-कभी वो थिएटर के बाहर जहां उनके फेवरेट एक्टर की फिल्म लगी होती थी, वहां जश्न मनाया करते थे। लेकिन आज यही फैन क्लब, फैन आर्मी में तब्दील हो चुके हैं। किसी फिल्म का टीजर आते ही उस फिल्म के एक्टर के हजारों प्रशंसक उसे सोशल मीडिया में शेयर करते हैं। पहले जो चर्चा गली-गली तक पहुंचने के लिए कई दिन और कई हफ्तों लिया करती थी, आज वह चर्चा सोशल मीडिया के जरिए प्रशंसकों के बीच कुछ ही घंटों में पहुंच जाती है।

इनसे प्रूफ होता है सोशल मीडिया इंपैक्ट

‘अल्फा’ का टीजर और डिजिटल ट्रैकिंग: कुछ समय पहले आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म ‘अल्फा’ का टीजर आते ही सोशल मीडिया पर जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई। कई बड़े सितारों ने सार्वजनिक रूप से इसकी सरहना की, जिससे फिल्म को अत्यधिक डिजिटल बढत मिल गई। यू-ट्यूब फैनफेस्ट: वरुण धवन ने यू-ट्यूब फैनफेस्ट में अपनी फिल्म के गीत का लाइव प्रार किया है।यह दिखाता है कि डिजिटल आयोजनों का महत्व अब पारंपरिक प्रेस कॉन्फ्रेंस से ज्यादा हो गया है। वायरल वीडियो का इंपैक्ट: 2026 के गणतंत्र



दिवस रिवरसल में सेनिकों का एक बॉलीवुड गीत पर मार्च करते हुए वीडियो वायरल हुआ और पुराने हिट गीत को एक झटके में नई पीढ़ी तक पहुंचा दिया गया। इस तरह सोशल मीडिया पुराने कंटेंट को भी लोकप्रिय बनाने में देर नहीं लगाना। इंपलूएंसर मार्केटिंग: फिल्म निर्माता, इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब इंप्लूएंसर्स के साथ साझेदारी कर रहे हैं ताकि पारंपरिक विज्ञापनों से आगे सीधे युवाओं तक पहुंच सकें। हालिया बॉलीवुड अध्ययनों के अनुसार यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और कुछ एप्स अब दबक्यों को फिल्म देखने के लिए प्रेरित करने लगे हैं।

किसी समय तक फिल्मों का प्रचार और एक्टर्स का स्टारडम कई पारंपरिक तरीकों पर निर्भर होता था। आज सोशल मीडिया पर एक रील, एक वायरल डायलॉग या लाइव किसी स्टार की चमक रातों-रात आसमान तक पहुंचा सकते हैं। अब सोशल मीडिया फॉलोअर्स किसी एक्टर का स्टारडम तय करने में बड़ा रोल निभा रहे हैं।

सोशल मीडिया से बदल रहा बॉलीवुड स्टारडम का सीन



दर्शकों-फैंस से सीधे जुड़ रहे कलाकार: वास्तव में सोशल मीडिया ने कलाकारों को सीधे-सीधे दर्शकों से जोड़ दिया है। पहले सितारों और दर्शकों के बीच मीडिया की एक दीवार होती थी। अब फिल्म स्टार्स अपने फोन से सोशल मीडिया के जरिए सीधे करोड़ों लोगों तक पहुंच जाते हैं। प्रचार का बड़ा माध्यम बना सोशल मीडिया: दुनिया भर में सुपर फैन इकोनॉमी, एक बड़ा और कल्चरल इकोनॉमी का मॉडल बन चुका है। इसमें प्रशंसक किसी कलाकार के प्रचारक की भूमिका निभाते हैं। आज फिल्म के गानों की सफलता का एक पैमाना यह है कि उस पर कितनी रीलस बनी हैं। निर्माता अब ऐसे गीत और संवाद तैयार करवाते हैं, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो सकें। इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और

डिजिटल इंप्लूएंसर्स के सहयोग से फिल्म प्रचार का स्वरूप पूरी तरह से बदल गया है। वास्तव में आज फिल्म के प्रचार का बड़ा हिस्सा फिल्म के कंटेंट, उसकी बनावट-बुनावट से कहीं ज्यादा उसका एंजोरिश्म हो चुका है। कौन-सा वीडियो कितने लोगों तक पहुंचेगा, कौन-सा गाना वायरल होगा, कौन-सा संवाद बनेगा, इन सबका निर्णय अब काफी हद तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में होने लगा है। यही वजह है कि निर्माता अब सबसे पहले अपने फिल्म के प्रचार-प्रसार और अच्छे व्यवसाय के लिए मजबूत डिजिटल टीम का गठन करते हैं। डिजिटल इंपैक्ट रखता है मायने: यह सच है कि आज भी केवल सोशल मीडिया के जरिए कोई फिल्म हिट नहीं हो सकती है। लेकिन यह बात भी सही है कि सोशल मीडिया की चर्चा के बिना आजकल अच्छी से अच्छी फिल्मों भी चर्चा से वंचित रह सकती है। आज अखबारों, टीवी चैनलों और किसी जमाने में शहर में घूम-घूमकर लाउडस्पीकर के जरिए फिल्म का प्रचार करने वाला तौर-तरीका सब खत्म हो चुका है और अगर है भी तो वो प्रभावी नहीं रहा। आज एक वायरल रील, मीम या हैशटैग से फिल्म का जबर्दस्त प्रचार हो सकता है और हो रहा है। इस पूरे सिनेरियो को देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले वर्षों में किसी बॉलीवुड एक्टर का स्टारडम पूरी तरह इस बात से तय होगा कि उस अभिनेता के फालोअर्स कितने हैं? उसकी डिजिटल एंगेजमेंट क्या है? और उसकी फैन कम्युनिटी और ऑनलाइन प्रभाव कितने महत्वपूर्ण हैं? *